प्रकाशन तिथि : 01/05/2024 वर्ष 76 • अंक 4 • जनवरी-मार्च 2024 कुल पेज : 20 • मूल्य : ₹ 2

प्रकाशन समाचार

राजकमल प्रकाशन समूह

1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 ❒ **शाखाएँ :** अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना-800006 ❒ पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-211001 मुम्बई : 1, अनमोल सोआराबजी संतुक लेन, धोबी तलाव, मरीन लाइन-400002 ❒ फोन : 23274463, 23288769 ❒ व्हाट्सएप्प नम्बर : +91 9311397733 ❒ info@rajkamalprakashan.com

राजकमल प्रकाशन दिवस पर विचार पर्व 'भविष्य के स्वर' का आयोजन

27 फरवरी, 2024, मंगलवार नई दिल्ली। हर चीज में इतिहास होता है लेकिन हर चीज़ इतिहास नहीं होती। इतिहास को पठनीय बनाने के लिए हमें उसे आमजन की भाषा में ही बताना होगा। अतीत और वर्तमान को समझने और भविष्य को देखने की नई खिड़की खोलने वाले कई सारे प्रश्न हमारे सामने हैं, उत्तर हमें और हमारी नई पीढ़ी को ढूँढ़ने हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास में अपनी जगह बनाने के लिए आदिवासी कविता ने सबसे लम्बी लड़ाई लड़ी है। आदिवासी समाज के गीतों में आसपास की पारिस्थितिकी में जो कुछ भी घट रहा है वह सब शामिल होता है। उनके गीतों में जीवन का राग है। उनके गीतों में प्रेम है तो विद्रोह भी है। ये बातें राजकमल प्रकाशन के 77वें स्थापना दिवस पर आयोजित विचार पर्व 'भविष्य के स्वर' के वक्ताओं ने कही।

राजकमल प्रकाशन दिवस पर इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में सहयात्रा उत्सव मनाया गया। इस मौक़े पर विचार पर्व 'भविष्य के स्वर' का चौथा अध्याय प्रस्तुत किया गया जिसमें विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आने वाले चार वक्ताओं ने निर्धारित विषयों पर भविष्य की दिशा तय करने वाले खास वक्तव्य दिए। इसमें शामिल वक्ता थे इतिहास अध्येता ईशान शर्मा, कहानीकार कैफ़ी हाशमी, कवि विहाग वैभव और आदिवासी लोक साहित्य अध्येताव कवि पार्वती तिर्की।

व्हाट्सएप पर जो मिल जाता है, वह इतिहास नहीं : ईशान शर्मा

विचार पर्व के पहले वक्ता इतिहास अध्येता ईशान शर्मा ने कहा कि हम एक ऐसे समाज में रहते हैं जहाँ बहुमत द्वारा स्वीकार किए गए तथ्यों को ही इतिहास मान लिया जाता है। बहुत-सी ऐसी कहानियाँ हैं जो हमें कहीं भी लिखित रूप में नहीं मिलतीं लेकिन लम्बे समय तक सुनते रहने से वह इतिहास का दर्जा पा चुकी हैं। हम सबका इतिहास पर अधिकार है क्योंकि इतिहास हमारी खुद की कहानी है। आपको यह समझना बहुत ज़रूरी है कि हमें व्हाट्सएप पर जो मिल जाता है वह इतिहास नहीं है। सही इतिहास जानने के लिए आपको पढ़ना पड़ेगा।" उनका वक्तव्य 'आज के दौर में इतिहास' विषय पर केन्द्रित था जिसमें उन्होंने इतिहास को पढ़ने की जरूरत, उसके स्रोत और इतिहास के कुछ जाने-पहचाने मिथकों पर बात की।

रचनाओं में पाठक को चुनौती नहीं देते लेखक : कैफ़ी हाशमी

अगले वक्ता कैफ़ी हाशमी ने कहा, "जब प्रेमचंद लिखा करते थे तब भी समस्याएँ छोटी तो नहीं थीं। समस्याएँ हर दौर की बड़ी ही होती हैं लेकिन उस समय समस्याओं के सापेक्ष समाज सरल था। यह सरलता इक्कीसवीं सदी के शुरुआती सालों तक बनी रही। अब हम डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन के दौर में है जहाँ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ओवरफ़्लो ऑफ़ इनफ़ॉर्मेशन जैसी चीजें हमारे सामने हैं। ऐसे में यह लेखकों के ऊपर है कि वह समय की इन महीन परतों के बीच कथा के लिए कैसे विषय चुन सकते हैं।"

उन्होंने आगे कहा, "एक तरफ समाज शिक्षित हुआ है, जागरूक हुआ है, पहले से ज़्यादा लोगों के हाथों में किताबें आई हैं। लेकिन दूसरी तरफ लेखक पर दबाव यह है कि हमें कथा और कहानी को आसान बनाना है। इस बात का नकारात्मक प्रभाव उन लेखकों पर पड़ता है जो अच्छे विषय चुन सकते थे लेकिन बाज़ार, पठनीयता, प्रकाशक और आलोचकों के फैलाए हुए स्यूडो नैरेटिव में हल्के विषयों की तरफ मुड़ जाते हैं। वहीं कई बार यह भी होता है कि लेखक अपने पाठक की समझ को कमतर आँकते हैं। वह अपनी रचना में पाठकों को चुनौती नहीं देते। हिन्दी में बहुत कम रचनाएँ ऐसी हैं जो पाठकों को चुनौती देती हैं।" कैफ़ी हाशमी का वक्तव्य 'कथा में विषय का चुनाव' विषय पर केन्द्रित था।

दलित विमर्श समकालीन साहित्य की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि : विहाग वैभव

इसके बाद कवि विहाग वैभव ने 'इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता' विषय पर अपना वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा, "इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता मूलत: बहुवचन संज्ञा है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में यह पहली बार हुआ कि कविता में इतनी भिन्न-भिन्न सामाजिक समूह शेष पृष्ठ 2 पर

शेष पृष्ठ 1 भविष्य के स्वर...

की अभिव्यक्तियाँ प्रकाशित हुईं। दलित आन्दोलन, स्त्री आन्दोलन और आदिवासी विमर्श ने समकालीन कविता ही नहीं बल्कि समूचे हिन्दी साहित्य को बदलकर रख दिया है।" आगे उन्होंने कहा कि हिन्दी साहित्य में अपनी जगह बनाने के लिए सबसे लम्बा सफ़र आदिवासी कविता ने तय किया है और इसी ने सबसे लम्बी लड़ाई लड़ी है।

आदिवासी समाज के लिए चलना ही नृत्य है और बोलना ही गीत : पार्वती तिर्की

'भविष्य के स्वर' कार्यक्रम की अन्तिम वक्ता पार्वती तिर्की ने अपने वक्तव्य में कहा कि आदिवासी समाज के गीतों में आसपास की पारिस्थितिकी में जो कुछ भी घट रहा है वह सब शामिल होता है। उनके गीतों में जीवन का राग है। उनके गीतों में प्रेम है तो विद्रोह भी है। आदिवासी समाज के लिए हर मौसम उत्सव की तरह होता है और जीवन की हर गतिविधि के लिए उनके पास अपने गीत हैं। यह इतना सहज हैं कि उनके लिए चलना भी नृत्य है और बोलना ही गीत है।

उनका वक्तव्य 'लोकगीतों के नए पाठ कैसे हों?' विषय पर केन्द्रित था। उन्होंने कहा कि वर्तमान व्यवस्था में जंगल और आदिवासी के लिए बहुत ख़तरे हैं। वर्तमान में लोकगीतों की लोकप्रियता कम हो रही है। गीतों को न गाना इस सदी का सच है जो कि इस व्यवस्था की उपज है। उनके गीतों को दोहराया जाना ही व्यवस्था से सवाल करना है। इसलिए इन गीतों के

पुनर्पाठ की बहुत ज़रूरत है। अपने वक्तव्य के बीच-बीच में उन्होंने कुड़ुक आदिवासी समाज के कई लोकगीत गाकर सुनाए जिन्हें श्रोताओं ने तल्लीनता से सुना रहे।

युवा प्रतिभाओं को सामने लाने का एक विनम्र प्रयास है 'भविष्य के स्वर' : अशोक महेश्वरी

इससे पहले, कार्यक्रम के आरम्भ में अपने स्वागत वक्तव्य में राजकमल प्रकाशन के प्रबन्ध निदेशक अशोक महेश्वरी ने कहा, "भविष्य के स्वर युवा प्रतिभाओं को सामने लाने का हमारा एक विनम्र प्रयास है। आज चौथा विचार पर्व है। अब तक इसमें चिह्नित युवा 40 वर्ष तक की आयु के रहे हैं। यह पहली बार हुआ है कि हमने अधिकतम आयु सीमा 30 वर्ष रखी है।"

उन्होंने कहा कि आज राजकमल प्रकाशन 77वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। अपनी इस लम्बी यात्रा में यह अनेक पड़ावों से गुजरा है। राजकमल का इतिहास गौरवपूर्ण उसके लेखकों से है। यह हमारा सौभाग्य है कि हमने सभी प्रमुख लेखकों की प्राय: सभी पुस्तकों का प्रकाशन किया है। मुझे यह बताते हुए खुशी है कि इस परम्परा में चार महत्त्वपूर्ण नाम और जुड़े हैं। चन्द्रकिशोर जायसवाल, निर्मल वर्मा, गगन गिल और संजीव। उन्होंने बताया कि हमने एक प्रकाशन समूह के रूप में इस वर्ष 217 नई पुस्तकें प्रकाशित कीं और 781 पुस्तकों के नए संस्करण प्रकाशित किए।

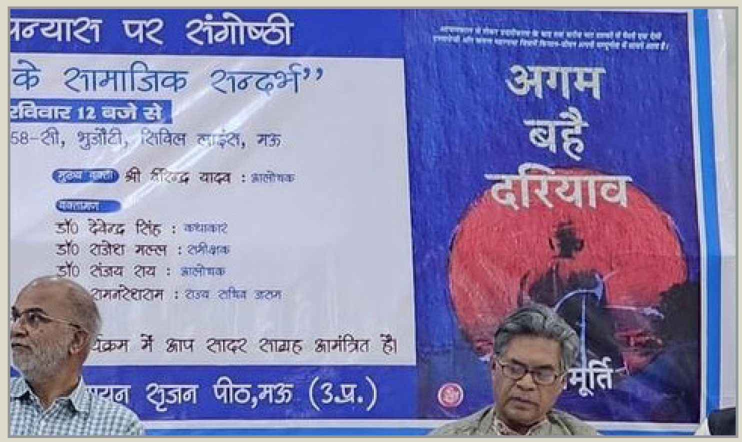

रविवार 17 मार्च को शिव मूर्ति जी के नए उपन्यास 'अगम बहै दरियाव' पर उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल जिले मऊ में विस्तृत परिसंवाद आयोजित। आयोजथस्थल 'राहुल सांकृत्यायन सृजन पीठ' था, जिसे जयप्रकाश धूमकेतु (संपादक 'अभिनव कदम') ने अपने जीवट और समर्पण से अत्यंत विस्तृत व सुरुचिपूर्ण ढंग से निर्मित व सुसज्जित किया है। इसके सभागार-सह-पुस्तकालय की दीवालों पर हिन्दी सहित अन्य भारतीय भाषाओं के लेखकों के फ़ोटोग्राफ़ लगाए गए हैं। लगभग चार घंटे तक चले इस आयोजन में श्रोताओं की भरपूर उपस्थिति बरक़रार रही। लेकिन इस आयोजन में शिरकत करते हुए इस बात का शिद्दत से अहसास हुआ कि प्रगतिशील जमातों में भी अब वर्ण और वर्ग से मुक्त होने की परम्परा का तेज़ी से क्षरण हो रहा है। आज के इस चुनौतीपूर्ण समय में प्रगतिशील बौद्धिकों की जमात का दमनकारी अस्मिता के प्रति ग़ैर-आलोचनात्मक होना, विस्मित व चिंतित करनेवाला है। बहरहाल 'अगम बहै दरियाव' उपन्यास को इसलिए भी पढ़ा जाना चाहिए कि हिन्दी की मुख्यधारा के एक लेखक द्वारा लिखे गए इस उपन्यास में उत्तर भारत का समूचा ग्रामीण परिदृश्य आंबेडकरवादी चिंतनधारा के साथ उपस्थित है। मनुवादी वर्णाश्रमी व्यवस्था और हिन्दुत्ववादी राजनीति की बेबाक और तीखी आलोचना करने वाली इस दौर की यह महत्त्वपूर्ण कृति है। इस पर विस्तृत विचार और चर्चा अपेक्षित है।
— वीरेन्द्र यादव

पाठक चाहता है कि लेखक जो लिखे उस पर वह भरोसा कर सके

सभा में हुई 'हिन्दी पाठक को क्या पसन्द है' विषय पर परिचर्चा

23 मार्च, 2024 शनिवार नई दिल्ली। पढ़ना भी एक कला है। लिखे हुए को समझने के लिए एक नज़र होना ज़रूरी है। अगर आप ज़िंदगी की नब्ज़ को अपने लेखन में ला पा रहे हैं तो आपका लिखा हुआ बहुत पढ़ा जाएगा। लेकिन हिन्दी का लेखक-समाज पाठक की चाहना से बहुत डरा हुआ है। वर्तमान हालात को देखते हुए लेखक के लिए उसका उद्देश्य स्पष्ट होना बहुत ज़रूरी है कि वह अपने लेखन के जरिए समाज को क्या देना चाहता है। इसलिए हमारी प्रतिबद्धता सबसे पहले अपने लेखन की तरफ़ होनी चाहिए। एक लेखक को इस बात से नहीं डरना चाहिए कि वह जो लिख रहा है उसे पाठक समाज किस तरह से देखेगा अथवा स्वीकार करेगा या करेगा भी नहीं। यह बातें शुक्रवार को राजकमल प्रकाशन समूह की मासिका विचार-बैठकी की मासिक शृंखला 'सभा' की पाँचवी क़ड़ी में 'हिन्दी पाठक को क्या पसन्द है' विषय पर परिचर्चा के दौरान वक्ताओं ने कहीं।

इंडिया हैबिटेट सेंटर के गुलमोहर सभागार में आयोजित इस परिचर्चा में कथाकार-नाटककार हृषीकेश सुलभ, लेखक-पत्रकार गीताश्री, इतिहासविद् अशोक कुमार पांडेय और सम्पादक-आलोचक-कवि अविनाश मिश्र बतौर वक्ता मौजूद रहे। वहीं सूत्रधार की भूमिका राजनीतिक उपन्यासकार नवीन चौधरी ने निभाई।

सभा की शुरुआत करते हुए राजकमल प्रकाशन समूह के संपादकीय निदेशक सत्यानन्द निरुपम ने विषय परिचय देते हुए पिछले दस वर्षों की अवधि में पाठकों द्वारा सर्वाधिक पसन्द की गई किताबों के बारे में बताया। इसके बाद विश्व पुस्तक मेला के दौरान पाठकों की पसन्द को समझने के लिए राजकमल प्रकाशन समूह द्वारा किए गए सर्वे से प्राप्त आँकड़े प्रस्तुत किए गए।

74 फ़ीसदी पाठकों की पहली पसन्द छपी हुई किताबें

विश्व पुस्तक मेला में राजकमल प्रकाशन समूह की ओर से किए गए इस सर्वे में कुल 4528 पाठकों की भागीदारी रही जिसमें ज़्यादातर पाठक युवा वर्ग के थे। इसमें स्त्री पाठकों की संख्या 40 फ़ीसदी से अधिक रही। इस सर्वे में शामिल 74 फ़ीसदी पाठकों ने छपी हुई किताबों को अपनी पहली पसन्द बताया। विधाओं से जुड़े सवाल पर 39 फ़ीसदी पाठकों ने कथेतर विधा और 37 फ़ीसदी पाठकों ने कथा-साहित्य को पहली पसन्द बताया है। वहीं किताबों के चयन से जुड़े सवाल पर 36 फ़ीसदी पाठकों ने विषय के आधार पर और 28 फ़ीसदी पाठकों ने लेखक के नाम के आधार पर किताब चुनने को पहली प्राथमिकता बताया।

इसी तरह किताबें ख़रीदने के लिए 34 फ़ीसदी पाठकों ने सबसे सुविधाजनक माध्यम पुस्तक मेलों को, 31 फ़ीसदी पाठकों ने बुक स्टोर और 29 फ़ीसदी पाठकों ने ऑनलाइन माध्यमों को बताया है। इससे पता चलता है कि ऑनलाइन माध्यमों के प्रचार-प्रसार के बावजूद ज़्यादातर पाठक किताबों को सामने से देखकर, उन्हें छूकर ही ख़रीदना पसन्द करते हैं। सर्वे में शामिल पाठकों में से 42 फ़ीसदी ने नई किताबों की जानकारी मिलने का माध्यम सोशल मीडिया को बताया है।

लेखक समाज से नाराज़ हैं बहुत से पाठक

परिचर्चा की शुरुआत करते हुए 'सभा' के सूत्रधार नवीन चौधरी ने किताबों को लेकर वैश्विक स्तर पर वर्तमान रुझान बताते हुए कहा कि इस समय दुनिया-भर में कथेतर विधा की किताबें सबसे ज़्यादा पढ़ी जा रही हैं। उसके बाद धर्म और अध्यात्म, साइंस फ़िक्शन, रोमांटिक फ़िक्शन और सच्ची घटनाओं पर आधारित किताबों की माँग सबसे ज़्यादा है।

विषय-प्रवेश करते हुए उन्होंने कहा, "जब मैंने इस विषय पर चर्चा के लिए पाठकों से उनकी पसन्द के बारे में पूछा तो कई रोचक बातें सामने आईं। मुझे यह भी महसूस हुआ कि बहुत से पाठक लेखक समाज से नाराज़ हैं। ऐसा क्यों है यह हमें समझने की ज़रूरत है।"

पाठक की चाहना से डरे हुए हैं लेखक

कार्यक्रम के पहले वक्ता अशोक कुमार पांडेय ने कहा, "हिन्दी का लेखक-समाज पाठक की चाहना से बहुत डरा हुआ है। कोई भी लेखक यह नहीं जानता कि उसका पाठक वास्तव में उससे क्या चाहता है! लेखन एक यात्रा है जो लेखक और पाठक दोनों को मिलाकर पूरी होती है। मुझे लगता है कि शायद पाठक लेखक से सिर्फ़ इतना चाहता है कि लेखक जो लिखे उस पर वह भरोसा कर सके। यह हर तरह के पाठक की बेसिक ज़रूरत होती है।"

उन्होंने कहा, "हिन्दी का लेखक अपने आप को ज़रुरत से ज़्यादा एलीट समझने लगा है लेकिन वास्तव में वह ज़रुरत से ज़्यादा पिछड़ा हुआ है। उसे लगता है कि मैं ही महान हूँ और मैं जो लिखता हूँ उसे केवल महान लोग ही समझ सकते हैं। इस तरह से वह ख़ुद को सीमित कर रहा होता है। ऐसे में उसका लिखा हुआ भी समाज के किसी काम का नहीं होता।"

आगे उन्होंने कहा, "पुस्तक मेलों में हम देखते हैं कि कई लोग केवल तभी किताबें ख़रीदते हैं जब लेखक वहाँ मौजूद होता है और उसे लेखक के साथ सेल्फ़ी लेनी होती है, उसे लेखक से ऑटोग्राफ़ लेना होता है। ऐसे लोग पाठक नहीं होते। पाठक वह होता है जिसे लेखक की मौजूदगी से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। उसे जो पढ़ना होता है, वह उसे ख़रीदता है और आगे बढ़ जाता है।"

वर्तमान में बदल गई है पाठक की परिभाषा

अविनाश मिश्र ने कहा, "पिछले कुछ वर्षों में ब्लॉगिंग, सोशल मीडिया और ई-बुक्स के आने से पाठक की परिभाषा बहुत बदली है। अब उसे रीडर नहीं बल्कि एक यूज़र की तरह देखा जाता है क्योंकि इन प्लेटफ़ॉर्म्स पर जो लोग आते हैं, वह सब पाठक नहीं होते।"

लेखक के लिए उसका उद्देश्य स्पष्ट होना ज़रूरी

बातचीत को आगे बढ़ाते हुए गीताश्री ने कहा, "कोई लेखक क्या लिख रहा है, यह पाठक तय नहीं कर सकता। जब लेखक कुछ लिख रहा होता है तो उसके सामने कोई नहीं होता, उस समय कोई दबाव उस पर नहीं होना चाहिए।" आगे उन्होंने कहा, "एक लेखकीय स्वायत्तता होती है जिसकी मैं हिमायती हूँ। हमारी प्रतिबद्धता सबसे पहले अपने लेखन की तरफ़ है और उसी तरफ़ होनी चाहिए। हम देखते हैं कि आजकल राजनीति हर चीज़ पर हावी है। बच्चे भी राजनीतिक रूप से बहुत सक्रिय हैं। वह बड़े होने का इंतज़ार ही नहीं करना चाहते। ऐसे में लेखक के लिए उसका उद्देश्य स्पष्ट होना बहुत ज़रूरी है कि वह अपने लेखन के ज़रिए समाज को क्या देना चाहता है?"

बाज़ार साहित्यिक मूल्यों को तय नहीं कर सकता

पाठक की पसन्द पर बात करते हुए हृषीकेश सुलभ ने कहा, "दुनिया में पाठक इतनी तरह के हैं कि पाठक की पसन्द को सही-सही जान पाना और जानकर लिख लेना सम्भव नहीं है। लेकिन यह बातचीत बहुत ज़रूरी है क्योंकि इसके ज़रिए हम अपना मूल्यांकन कर सकते हैं। लेकिन मेरा संकट यह है कि पाठक क्या नहीं चाहता है? पाठक नहीं चाहता है कि लेखक बहुत ज़्यादा बोलें। पाठक चाहता है कि वह आपके लेखन में कुछ देखे तो उसे लगे कि वह ऐसा पहली बार देख रहा है।

नई आमद

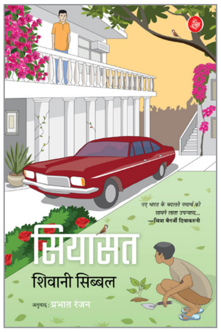

सियासत
(उपन्यास)

शिवानी सिब्बल
अनुवाद : प्रभात रंजन

PB : ₹ 299
ISBN : 9789360864446

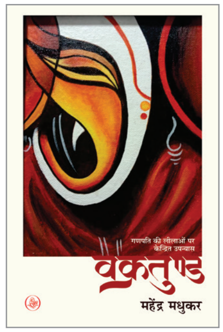

वक्रतुण्ड
(उपन्यास)

महेंद्र मधुकर

PB : ₹ 399
ISBN : 9789360866327

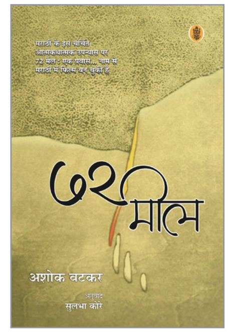

72 मील
(उपन्यास)

अशोक वटकर
अनुवाद : सुलभा कोरे

PB : ₹ 250
ISBN : 9788119989508

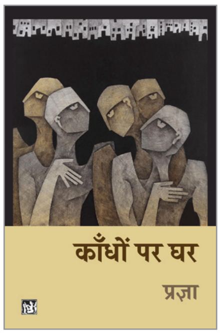

काँधों पर घर
(उपन्यास)

प्रज्ञा

PB : ₹ 299
ISBN : 9788119159031

सुनो कबीर
(उपन्यास)

सोनी पांडेय

HB : ₹ 199
ISBN : 9789391099176

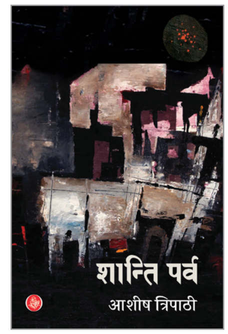

शान्ति पर्व
(कविता)

आशीष त्रिपाठी

PB : ₹ 250
ISBN : 9789360866280

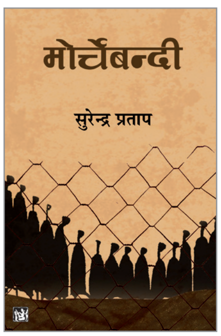

मोर्चाबन्दी
(उपन्यास)

सुरेन्द्र प्रताप

PB : ₹ 225 | HB : ₹ 600
ISBN : 9788119996780
ISBN : 9788119996339

ख्वाब-सा कुछ
(उपन्यास)

संजय मनहरण सिंह

PB : ₹ 350
ISBN : 9788119996773

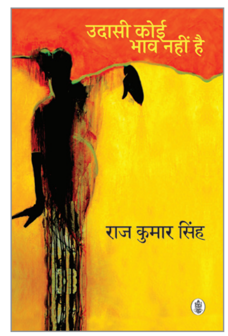

उदासी कोई भाव नहीं है
(कविता)

राज कुमार सिंह

PB : ₹ 299
ISBN : 9788119989645

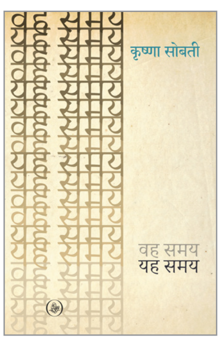

वह समय, यह समय
(उपन्यास)

कृष्णा सोबती

PB : ₹ 250
ISBN : 9788119159031

ओक्का बोक्का
(उपन्यास)

विनोद दूबे

PB : ₹ 299
ISBN : 9789394902596

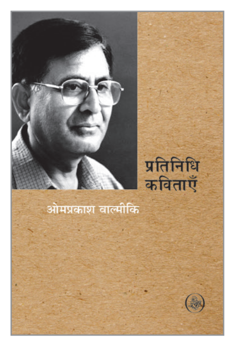

प्रतिनिधि कविताएँ
(कविता)

ओमप्रकाश वाल्मीकि

PB : ₹ 150
ISBN : 9789360862381

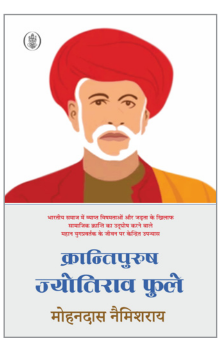

क्रान्तिपुरुष ज्योतिराव फुले
(उपन्यास)

मोहनदास नैमिशराय

PB : ₹ 350 | HB : ₹ 795
ISBN : 9788119092239
ISBN : 9788119092307

एक तानाशाह की प्रेमकथा
(उपन्यास)

ज्ञान चतुर्वेदी

PB : ₹ 399
ISBN : 9789360869823

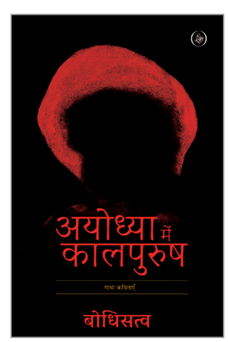

अयोध्या में कालपुरुष
(कविता)

बोधिसत्व

PB : ₹ 250
ISBN : 9789360866013

नई आमद

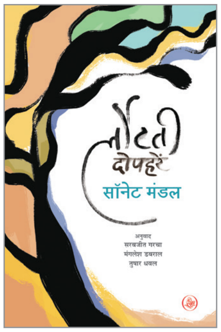

लौटती दोपहरें
(कविता)
सॉनेट मंडल
अनुवाद : सरबजीत गरचा, मंगलेश डबराल, तुषार धवल

PB : ₹ 250
ISBN : 9789360865108

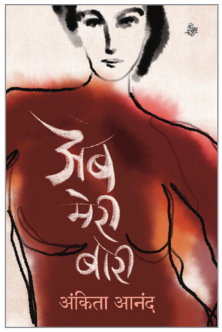

अब मेरी बारी
(कविता)
अंकिता आनंद

PB : ₹ 199
ISBN : 9789360861353

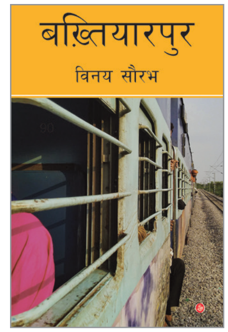

बख़्तियारपुर
(कविता)
विनय सौरभ

PB : ₹ 250
ISBN : 9789360861483

घड़ी दो घड़ी
(कविता)
बसंत त्रिपाठी

PB : ₹ 250
ISBN : 9789360866150

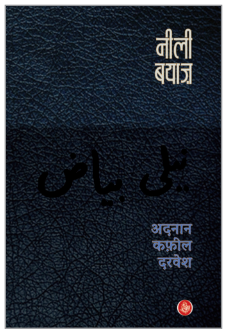

नीली बयाज़
(कविता)
अदनान कफ़ील दरवेश

PB : ₹ 250
ISBN : 9789360866174

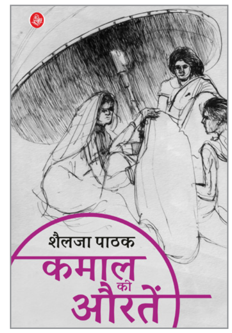

कमाल की औरतें
(कविता)
शैलजा पाठक

PB : ₹ 250
ISBN : 9789360863074

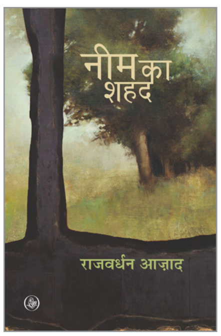

नीम का शहद
(कविता)
राजवर्धन आज़ाद

HB : ₹ 895
ISBN : 9788119835362

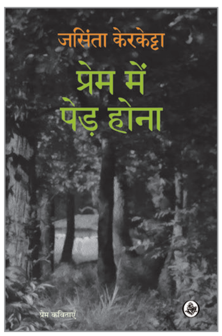

प्रेम में पेड़ होना
(कविता)
जसिंता केरकेट्टा

PB : ₹ 199
ISBN : 9789360860165

यूँ तो सब कुछ पूर्ववत् है
(कविता)
हेमा दीक्षित

PB : ₹ 299
ISBN : 9788119996285

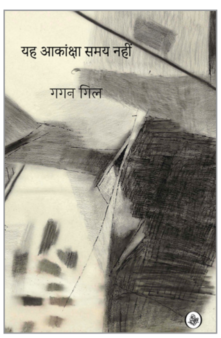

यह आकांक्षा समय नहीं
(कविता)
गगन गिल

HB : ₹ 250
ISBN : 9789360867539

एक परित्यक्त पुल का सपना
(कविता)
सौम्य मालवीय

PB : ₹ 299
ISBN : 9788119996865

सुनो जोगी और अन्य कविताएँ
(कविता)
संध्या नवोदिता

PB : ₹ 299
ISBN : 9788119996346

दक्खिन टोला
(कविता)
अंशु मालवीय

PB : ₹ 299
ISBN : 9788119996094

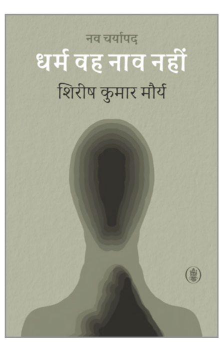

धर्म वह नाव नहीं
(कविता)
शिरीष कुमार मौर्य

PB : ₹ 250
ISBN : 9788119989997

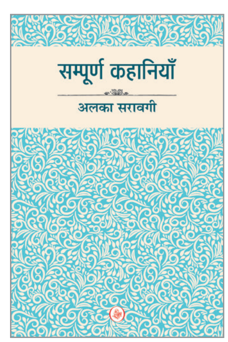

सम्पूर्ण कहानियाँ
(कहानी)
अलका सरावगी

PB : ₹ 250
ISBN : 9788119989997

नई आमद

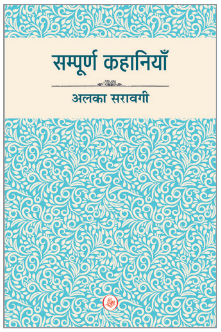

सम्पूर्ण कहानियाँ
(कहानी)

अलका सरावगी

PB : ₹ 399
ISBN : 9789360869786

एक ज़िन्दगी... एक स्क्रिप्ट भर!
(कहानी)

उपासना

PB : ₹ 250
ISBN : 9788119996421

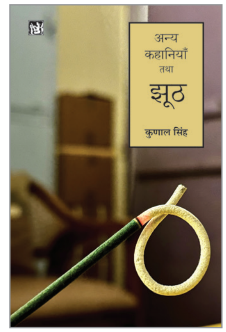

अन्य कहानियाँ तथा झूठ
(कहानी)

कुणाल सिंह

PB : ₹ 299
ISBN : 9788119996667

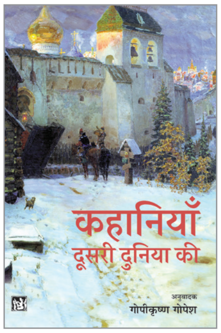

कहानियाँ दूसरी दुनिया की
(कहानी)

अनुवादक : गोपीकृष्ण गोपेश

PB : ₹ 200 | HB : ₹ 500
ISBN : 9788119996599
ISBN : 9788119996230

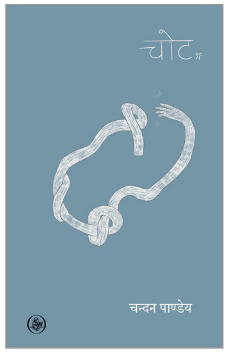

चोट
(कहानी)

चन्दन पाण्डेय

HB : ₹ 250
ISBN : 9789360862152

प्रतिरूप
(कहानी)

मनोज कुमार पांडेय

PB : ₹ 250
ISBN : 9789360863135

मेट्रोनामा : हैशटैग वाले क़िस्से
(कहानी)

देवेश

PB : ₹ 250
ISBN : 9789360867669

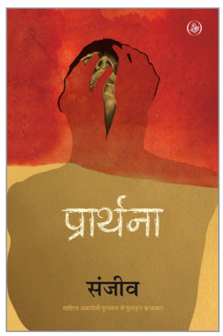

प्रार्थना
(कहानी)

संजीव

PB : ₹ 250
ISBN : 9789360860950

प्रतिनिधि कहानियाँ
(कहानी)

मृणाल पाण्डे

PB : ₹ 150
ISBN : 9789360861032

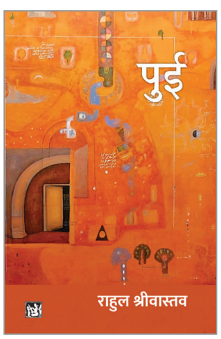

पुई
(कहानी)

राहुल श्रीवास्तव

PB : ₹ 250
ISBN : 9788119996643

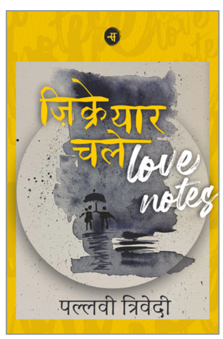

ज़िक्रे यार चले Love notes
(कहानी)

पल्लवी त्रिवेदी

PB : ₹ 250
ISBN : 9789360865535

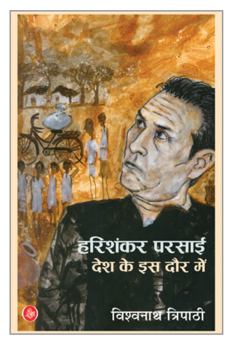

हरिशंकर परसाई देश के इस दौर में
(आलोचना)

विश्वनाथ त्रिपाठी

PB : ₹ 299 | HB : ₹ 795
ISBN : 9789360860134
ISBN : 9789360863968

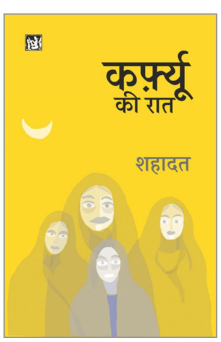

कर्फ़्यू की रात
(कहानी)

शहादत

PB : ₹ 350
ISBN : 9788119996100

अतर दुनिया में क्या हासिल
(कहानी)

प्रत्यक्षा

PB : ₹ 250
ISBN : 9789360864828

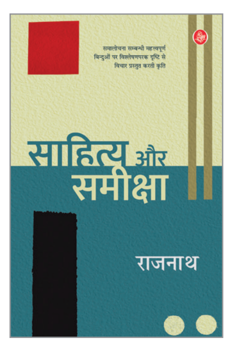

साहित्य और समीक्षा
(आलोचना)

राजनाथ

PB : ₹ 695
ISBN : 9789360864293

नई आमद

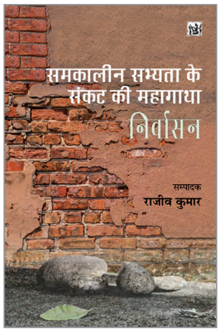

समकालीन सभ्यता के संकट की महागाथा
(आलोचना)
निर्वासन
सम्पादक : राजीव कुमार

PB : ₹ 895
ISBN : 9788119996087

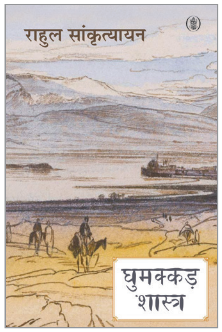

घुमक्कड़ शास्त्र
(यात्रा)
राहुल सांकृत्यायन

PB : ₹ 199
ISBN : 9788119092345

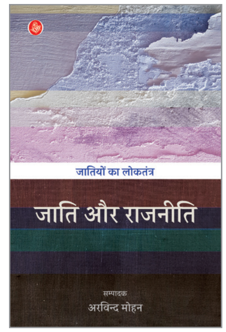

जातियों का लोकतंत्र
जाति और राजनीति
(राजनीति)
अनुवाद : अरविन्द मोहन

PB : ₹ 350 | HB : ₹ 795
ISBN : 9789360867591
ISBN : 9789360862664

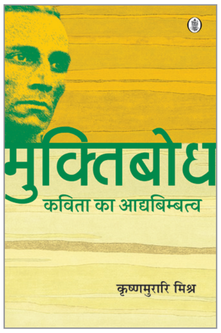

मुक्तिबोध कविता का आद्यबिम्बत्व
(आलोचना)
कृष्णमुरारि मिश्र

PB : ₹ 795
ISBN : 9788119989638

साइकिल से दुनिया की सैर
(यात्रा)
बिमल दे
अनुवाद : प्रेम कपूर

PB : ₹ 350
ISBN : 9788119133390

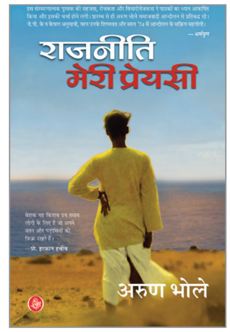

राजनीति मेरी प्रेयसी
(राजनीति)
अरुण भोले

PB : ₹ 350
ISBN : 9789360863074

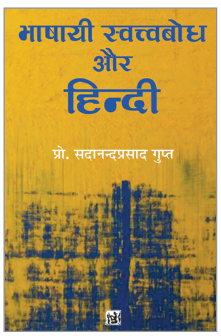

भाषायी स्वत्त्वबोध और हिन्दी
(आलोचना)
प्रो. सदानन्दप्रसाद गुप्त

HB : ₹ 600
ISBN : 9788119996391

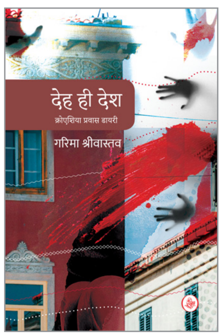

देह ही देश
(यात्रा-डायरी)
गरिमा श्रीवास्तव

PB : ₹ 299
ISBN : 9789360860028

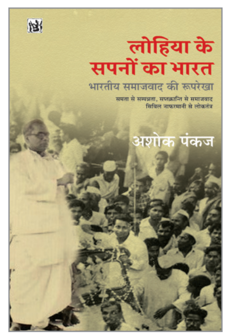

लोहिया के सपनों का भारत
(राजनीति)
अशोक पंकज

PB : ₹ 225 | HB : ₹ 600
ISBN : 9788119996063
ISBN : 9788119996506

नवाँ दशक
(आलोचना)
अविनाश मिश्र

HB : ₹ 299
ISBN : 9789360862459

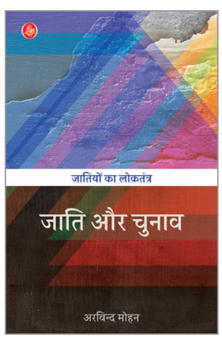

जातियों का लोकतंत्र **जाति और चुनाव**
(राजनीति)
अरविन्द मोहन

PB : ₹ 350 | HB : ₹ 795
ISBN : 9789360865764
ISBN : 9789360866990

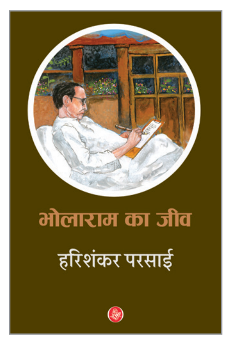

भोलाराम का जीव
(व्यंग्य)
हरिशंकर परसाई

PB : ₹ 250 | HB : ₹ 595
ISBN : 9789360861896
ISBN : 978-9360865078

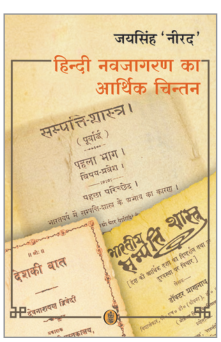

हिन्दी नवजागरण का आर्थिक चिन्तन
(आलोचना)
जयसिंह 'नीरद'

PB : ₹ 995
ISBN : 9788119989676

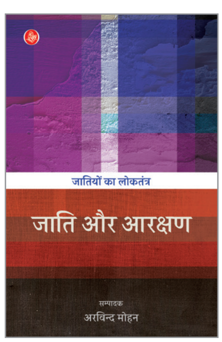

जातियों का लोकतंत्र **जाति और आरक्षण**
(राजनीति)
अनुवाद : अरविन्द मोहन

PB : ₹ 350 | HB : ₹ 795
ISBN : 9789360861681
ISBN : 9789360866648

निठल्ले बहुत बिजी हैं
(व्यंग्य)
सम्पत सरल

PB : ₹ 299
ISBN : 9789360862428

नई आमद

मानसे की जीत
(दलित साहित्य)

सुजाता पारमिता

PB : ₹ 225 | HB : ₹ 600
ISBN : 9788119996292
ISBN : 9788119996711

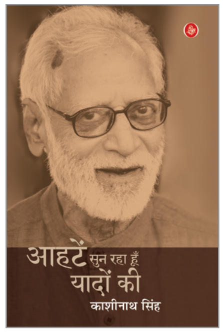

आहटें सुन रहा हूँ यादों की
(संस्मरण)

काशीनाथ सिंह

PB : ₹ 299 | HB : ₹ 795
ISBN : 9789360869809
ISBN : 9789360868222

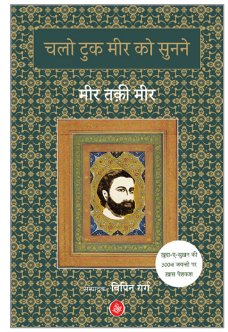

चलो टुक मीर को सुनने
(ग़ज़ल)

मीर तक़ी मीर
सम्पादक : विपिन गर्ग

PB : ₹ 999
ISBN : 9789360864910

साहित्य का दलित सौन्दर्यशास्त्र
(दलित साहित्य)

चंचल चौहान

PB : ₹ 399 | HB : ₹ 995
ISBN : 9788119989669
ISBN : 9788119989829

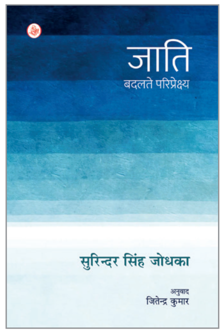

जाति बदलते परिप्रेक्ष्य
(समाज अध्ययन)

सुरिन्दर सिंह जोधका
अनुवादक : जितेन्द्र कुमार

HB : ₹ 250
ISBN : 9789360861957

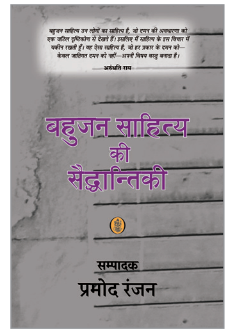

बहुजन साहित्य की सैद्धान्तिकी
(बहुजन साहित्य)

सम्पादक : प्रमोद रंजन

PB : ₹ 250 | HB : ₹ 595
ISBN : 9788119989973
ISBN : 9788119989232

तलाश खुद की
(व्यक्तित्व विकास)

एकता सिंह

PB : ₹ 399
ISBN : 9789360868888

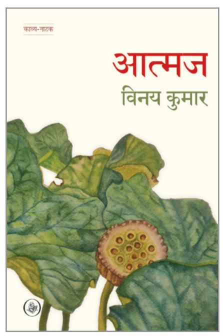

आत्मज
(काव्य-नाटक)

विनय कुमार

PB : ₹ 199
ISBN : 9789360861698

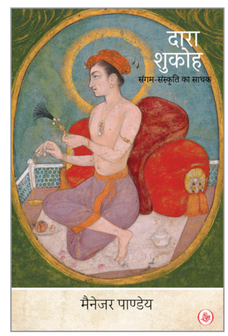

दारा शुकोह
(कथेतर)

मैनेजर पाण्डेय

PB : ₹ 299
ISBN : 9789360861346

आख़िर आत्महत्या क्यों?
(व्यक्तित्व विकास)

डा. एच.एल. माहेश्वरी

PB : ₹ 199
ISBN : 9788119989225

हिन्दी पत्रकारिता एक यात्रा
(पत्रकारिता)

मृणाल पाण्डे
अनुवादक : हर्ष रंजन

PB : ₹ 350 | HB : ₹ 595
ISBN : 9788119989270
ISBN : 9788119989188

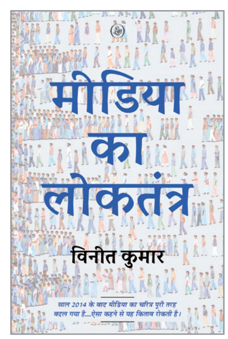

मीडिया का लोकतंत्र
(मीडिया अध्ययन)

विनीत कुमार

PB : ₹ 399
ISBN : 9789360869472

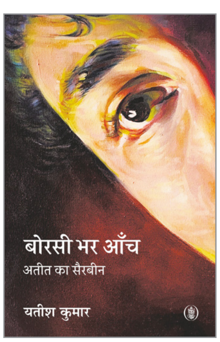

बोरसी भर आँच अतीत का सैरबीन
(संस्मरण)

यतीश कुमार

PB : ₹ 350
ISBN : 9788119989898

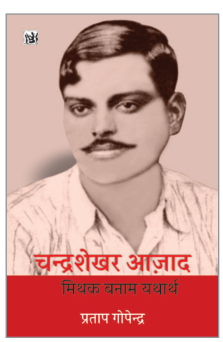

चन्द्रशेखर आज़ाद
मिथक बनामयथार्थ
(क्रान्तिकारी)

प्रताप गोपेन्द्र

PB : ₹ 550 | HB : ₹ 1500
ISBN : 9788119133970
ISBN : 9788119133956

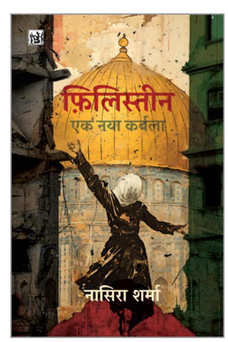

फ़िलिस्तीन
(समसामयिकी)

नासिरा शर्मा

PB : ₹ 350
ISBN : 9788119996742

सम्मान और पुरस्कार

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हुए प्रख्यात उर्दू शायर, गीतकार-पटकथा लेखक, नाटककार गुलज़ार

विनोद कुमार शुक्ल को लेखन और जीवन के समग्र अवदान के लिए मिला सर्वोच्च शब्द सम्मान 'आकाशदीप'

बहुप्रतिष्ठित साहित्यकार मृदुला गर्ग को 'जेके पेपर' संस्थान की ओर से 'लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड' से सम्मानित किया गया

भगवानदास मोरवाल को मिला भारतीय भाषा परिषद की ओर से कर्तृत्व समग्र सम्मान - 2024

'दहन' कहानी संग्रह के लिए मनोज रूपड़ा को मिला सर्वोच्च कृति सम्मान (छाप-कथा)

'उपशीर्षक' कविता संग्रह के लिए कुमार अम्बुज को मिला सर्वोच्च कृति सम्मान (छाप-कविता)

'मोर्चे पर विदागीत' कविता संग्रह के लिए कलिंगा लिटरेचर फेस्टिवल बुक अवाड्‌र्स की कविता श्रेणी में सम्मानित हुए विहाग वैभव

जेरी पिंटो के उपन्यास 'माहिम में क़त्ल' के अनुवाद के लिए कलिंगा लिटरेचर फेस्टिवल बुक अवाड्‌र्स की अनुवाद श्रेणी में सम्मानित हुए प्रभात रंजन

'सुन्दर के स्वप्न' पुस्तक के लिए दलपत सिंह राजपुरोहित को मिला सर्वोच्च कृति सम्मान (छाप-कथेतर)

वर्ष 2023 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित लेखक संजीव ने विश्व पुस्तक मेला में राजकमल प्रकाशन समूह के मंच से यह घोषणा की कि उनकी सभी किताबें अब राजकमल प्रकाशन समूह से प्रकाशित होंगी। उन्होंने कहा कि राजकमल प्रकाशन समूह पहले से हमारा प्रकाशक है। मेरे कई उपन्यास इन्होंने प्रकाशित किए हैं। प्रतिनिधि कहानियाँ प्रकाशित की हैं। इनसे पुराना संबंध और वर्षों का विश्वास है। इसी विश्वास के कारण मैंने राजकमल को अपनी सभी पुस्तकों के प्रकाशन के लिए अधिकृत किया है। मुझे उम्मीद है कि मेरे इस निर्णय से मेरे तमाम पाठकों को भी सुविधा होगी कि उन्हें मेरी सभी किताबें एक ही जगह सुलभ हो जाएँगी।

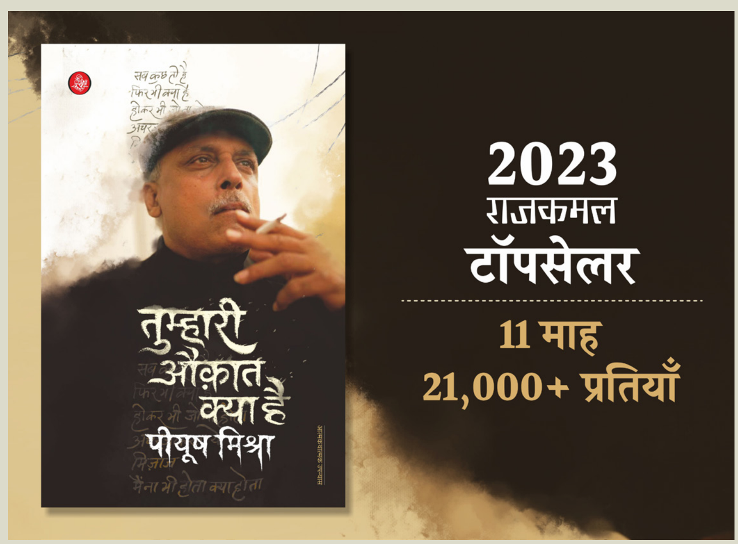

मात्र ग्यारह महीनों में पीयूष मिश्रा के आत्मकथात्मक उपन्यास 'तुम्हारी औक़ात क्या है पीयूष मिश्रा' की 21000 से अधिक प्रतियों को मिला पाठकों का प्यार! इसी के साथ यह किताब वर्ष 2023 की राजकमल टॉपसेलर बन गई है। पीयूष मिश्रा को हार्दिक बधाई और उन सभी पाठकों का आभार जिनके प्यार और भरोसे ने इस किताब को वर्ष 2023 का टॉपसेलर बनाया।

अगर किताबों से कुछ होता नहीं है तो उन्हें जलाया क्यों जाता है? — नरेश सक्सेना

लखनऊ में सजा राजकमल किताब उत्सव

नई दिल्ली/लखनऊ। 12 जनवरी से 16 जनवरी तक लखनऊ में सजा 'राजकमल किताब उत्सव'। गोमती नगर स्थित अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध शोध संस्थान में आयोजित इस पाँच दिवसीय महोत्सव में लखनऊ शहर के अलावा देश भर के साहित्यकारों ने हिस्सा लिया। किताब उत्सव में पुस्तक प्रदर्शनी लगाने के साथ ही पाठक-लेखक सम्मिलन, रचना पाठ, लेखकों से बातचीत, विविध विषयों पर परिचर्चा, काव्य पाठ, नई किताबों के लोकार्पण समेत अनेक गतिविधियाँ आयोजित हुईं। इस महोत्सव का उद्घाटन 12 जनवरी शुक्रवार को अपराह्न 03 बजे अखिलेश, कात्यायनी, नरेश सक्सेना, रमेश दीक्षित, रूपरेखा वर्मा, वन्दना मिश्र, वीरेन्द्र यादव की विशिष्ट उपस्थिति में हुआ।

इस अवसर पर अखिलेश ने कहा कि यह एक ऐसा उत्सव, एक ऐसा जश्न है जो आपको ख़ुशी तो देता ही है और आपको समझ भी देता है। अगली वक्ता कात्यायनी जी ने कहा कि पढ़ने की संस्कृति को बढ़ाने के लिए राजकमल प्रकाशन ने लखनऊ में जो किताब उत्सव का आयोजन किया है, वह बहुत ही सराहनीय है। किताब उत्सव बहुत ही स्वागतयोग्य कदम है। प्रतिष्ठित उपन्यास 'अल्लाह मियाँ का कारख़ाना' के लेखक मोहसिन ख़ान ने कहा कि किताबें हमारे लिए बेहद ज़रूरी होती हैं। मैं दुआ करता हूँ कि किताब उत्सव की आवाज़ बहुत दूर तक जाए।

रूपरेखा वर्मा ने कहा कि राजकमल प्रकाशन समूह द्वारा यह आयोजन जिस दौर में किया जा रहा है उसमें किताबों की चिंता कोई नहीं करता। हमें हमेशा किताबों की ओर लौटना चाहिए।

प्रतिष्ठित आलोचक वीरेन्द्र यादव ने कहा कि आज के दौर में पुस्तकों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। ऐसे में जब हिन्दी का सबसे बड़ा प्रकाशक इतना बड़ा किताब उत्सव करता है तो यक़ीनन यह सराहनीय प्रयास है। यह एक अच्छी शुरुआत है।

वन्दना मिश्र ने कहा कि यह शहर मुंशी नवल किशोर का शहर है। जिसने इतिहास बनाया है यह उसका शहर है। लखनऊ हमेशा से ही किताब प्रेमियों का शहर रहा है। किताबें हमें तो बदलती ही हैं, बल्कि पूरी दुनिया को बदलती हैं। जैसे गीतांजलि श्री के उपन्यास 'रेत समाधि' ने एक मानक तय किया।

रमेश दीक्षित ने कहा कि किताबों की वजह से ही मैं बोलना सीख पाया। राजकमल ने विभिन्न विषयों की किताबें छापकर बहुत बड़ा काम किया है। अच्छी से अच्छी किताबें लाने के लिए यह प्रकाशक प्रतिबद्ध है। किताबों को पढ़ने का सिलसिला हमेशा चलता रहा है और चलता रहेगा।

नरेश सक्सेना ने कहा कि किताब में शब्द होते हैं, शब्द मरा नहीं और शब्द मरेगा नहीं। कविता जब बोलती है तो चोट करती है। अगर किताबों से कुछ होता नहीं है तो उन्हें जलाया क्यों जाता है? जब तक मनुष्य हैं, शब्द बचे रहेंगे। इस सत्र का धन्यवाद ज्ञापन राजकमल प्रकाशन के सीईओ आमोद महेश्वरी ने दिया।

अगला सत्र 'हमारा शहर हमारे गौरव' का रहा। इसमें यशपाल के लेखन और जीवन पर बातचीत की गई। इस दौरान प्रीती चौधरी ने यशपाल की रचनाओं से एक अंश पाठ किया। इस सत्र में वरिष्ठ आलोचक वीरेन्द्र यादव ने यशपाल के लेखन पर वक्तव्य दिया और कुमार पंकज ने उनके जीवन के विविध पक्षों के संदर्भ में यशपाल को याद किया। इस सत्र का संचालन नाजिश अंसारी ने किया। किताब उत्सव के पहले दिन का अंतिम सत्र प्रताप गोपेन्द्र की किताब 'चन्द्रशेखर आज़ाद' के लोकार्पण का रहा। इस सत्र में सुभाष चन्द्र कुशवाहा, सुधीर विद्यार्थी और फिरोज नकवी ने किताब का लोकार्पण किया। इस सत्र का संचालन अशोक शर्मा ने किया।

दूसरे दिन का पहला सत्र 'आधुनिक अवधी कविता' विषय पर केन्द्रित रहा। इस सत्र में अमरेन्द्र त्रिपाठी और प्रकाश चंद्र गिरी ने अवधी भाषा के स्वरूप और साहित्य पर वक्तव्य दिया। सत्र का संचालन अनमोल मिश्र ने किया। अगला सत्र राकेश कबीर के कविता संग्रह 'तुम तब आना' के लोकार्पण का रहा। इस सत्र में मुख्य वक्ता रविकांत चंदन, अध्यक्ष राकेश बेदा, विशिष्ट अतिथि पवन, बी. आर. विप्लवी उपस्थित रहे। तीसरे सत्र में राजकुमार सिंह के कविता संग्रह 'उदासी कोई भाव नहीं है' का लोकार्पण हुआ। लोकार्पण सत्र में दैनिक जागरण के उत्तर प्रदेश के राज्य संपादक आशुतोष शुक्ल और मो. नदीम उपस्थित रहे। चौथा सत्र 'पोस्ट ट्रुथ के दौर में पत्रकारिता' विषय पर केन्द्रित रहा। इस सत्र में वरिष्ठ पत्रकार नसीरुद्दीन हैदर ख़ान, नवीन जोशी और नागेंद्र जी मौजूद रहे। नागेंद्र जी ने कहा कि पहले तथ्यों की पड़ताल के साथ अख़बार निकलते थे। लेकिन अब भी जो विश्वसनीयता बची है वह अख़बारों में ही है। नसीरुद्दीन हैदर ख़ान ने कहा कि सोशल मीडिया बे-आवाज़ों की आवाज़ है। सच झूठ के बराबर नहीं फैलता। जब तक किसी ख़बर के पीछे का सच पता चलता है, तब तक झूठ बहुत नुकसान कर चुका होता है। पोस्ट ट्रुथ विशुद्ध राजनीतिक विचार के लिए यहां प्रसारित किया गया। इस मौक़े पर आलोक पराड़कर ने कहा कि पोस्ट ट्रुथ के दौर में बहुमत सबसे अधिक स्वीकार किया जाता है। नवीन जोशी ने कहा कि बहुमत से आप लोकतांत्रिक व्यवस्था तो चला सकते हैं, लेकिन सच को छुपा नहीं सकते। अगले सत्र में विपिन गर्ग द्वारा संवादित किताब 'चलो टुक मीर को सुनने' का लोकार्पण हुआ और उनसे इस किताब पर सलमान 'खयाल' ने बातचीत की। इस सत्र का संचालन अपूर्व अवस्थी ने किया।

'किताब उत्सव' के तीसरे दिन का पहला सत्र बिहार की पहली महिला आईपीएस अधिकारी मंजरी जारुहार की आत्मकथा 'मैडम सर' पर केन्द्रित रहा। इस सत्र में वरिष्ठ साहित्यकार बी. एस. एम. मूर्ति और वरिष्ठ कथाकार और पी. एस. अधिकारी शैलेंद्र सागर ने मंजरी जारुहार से किताब पर बातचीत की। इस सत्र का संचालन फ़रज़ाना महदी ने किया। दूसरे सत्र में राहुल सांकृत्यायन की जीवनी के लेखक अशोक कुमार पांडेय मंच पर थे। युवा कवि विशाल श्रीवास्तव ने उनसे किताब पर बातचीत की। इस दौरान अशोक कुमार पांडेय ने कहा, "राहुल सांकृत्यायन के भीतर कई तरह के अन्तर्विरोध मौजूद रहे। उनके भीतर विचारों की एक खिचड़ी थी जो उन्हें कई बार ग़लत दिशाओं में ले जाती थी। अशोक कुमार पांडेय ने कहा कि इस समय सांप्रदायिकता मेरे लिए बहुत बड़ी समस्या है। मेरे लिए ये बहुत बड़ा सवाल है कि भारतीय समाज में इतने बड़े पैमाने पर कैसे फैली। इस क्रम में कथित नवजागरण काल या हिन्दी के बौद्धिक समाज का उर्दू को लेकर, दूसरे धर्मों को लेकर, स्त्रियों के मसले पर हिन्दी समाज में एक चुप्पी की स्थिति रही है। राहुल पर लिखते हुए भी मेरे मन में ये सवाल रहे। मुझे लगा कि राहुल सांकृत्यायन पर लिखने के बहाने मैं उस दौर के बौद्धिक समाज को भी समझ सकूँ।" सत्र का संचालन सबाहत आफ़रीन ने किया।

तीसरे सत्र में अमृतलाल नागर के कृतित्व पर बात रखते हुए प्रो. सूरज थापा ने कहा कि लिखने के पहले नागर जी रिसर्च को पूरा महत्त्व देते थे। उनकी यह ताक़त 'गदर के फूल', 'ये कोठेवालियाँ' या 'नाच्यो बहुत गोपाल' जैसी किताबों को पढ़ते हुए महसूस की जा सकती है। नूर आलम ने उनकी कहानी 'प्रायश्चित' का सुंदर पाठ किया।

पूर्व महानिदेशक, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, राकेश तिवारी जी ने कहा कि वे ख़ुद को सौभाग्यशाली मानते हैं कि उन्हें अमृतलाल नागर का स्नेह मिला और न जाने कितनी चीज़ें उनसे सीखने को मिलीं। सत्र का संचालन अरुण सिंह ने किया। अगला सत्र मार्क टली की किताब 'धीमी वाली फास्ट पैसेंजर' के लोकार्पण का था। किताब का लोकार्पण प्रतिष्ठित कथाकार अखिलेश, आलोचक वीरेन्द्र यादव, पूर्व महानिदेशक, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, राकेश तिवारी, कथाकार-संपादक मनोज कुमार पांडेय और अनुवादक पत्रकार प्रभात सिंह के हाथों हुआ। सत्र का संचालन शालिनी सिंह ने किया। किताब उत्सव के तीसरे दिन का अंतिम सत्र कथाकार अखिलेश के उपन्यास 'निर्वासन' पर केन्द्रित चुनिंदा आलेखों की शेष पृष्ठ 15 पर

विश्व पुस्तक मेला-2024 : बहुभाषिकता की थीम पर सजा राजकमल का 'जलसाघर'

राजकमल प्रकाशन ने 70 से अधिक नई पुस्तकों का लोकार्पण किया

विश्व पुस्तक मेला-2024 के पहले दिन जलसाघर की शुरुआत 'बहुभाषिकता का सुख' विषय पर परिचर्चा से हुई। इस सत्र में अशोक वाजपेयी, अब्दुल बिस्मिल्लाह, जानकीप्रसाद शर्मा, हरीश त्रिवेदी, पंकज चतुर्वेदी और शिवांगी बतौर वक्ता मौजूद रहे। वहीं सत्र का संचालन मृत्युंजय ने किया। इस सत्र में वक्ताओं ने कहा कि जो हिन्दी बोलते हैं हम उन्हें कहते हैं कि शुद्ध हिन्दी बोल रहा है जबकि वह अच्छी हिंदी बोलता है। जो अच्छी हिन्दी बोलते हैं उन्हें किसी ख़ास पक्ष से जोड़ लिया जाता है। उर्दू बोलते ही सेकुलर और अंग्रेज़ी का शब्द बोलते ही वह मॉडर्न हो जाता है। हिन्दी वालों के लिए ऐसे खाँचों में बँटने से बेहतर यही है कि वह उर्दू, अंग्रेज़ी और हिंदी मिश्रित भाषा का प्रयोग करें। बहुभाषी भारत की ख़ूबसूरती को समझना है तो हमें कम से कम दस-दस शब्द देश की सभी भाषाओं के सीखने चाहिए। दूसरे सत्र में अरविंद मोहन की जातियों का लोकतंत्र शृंखला की तीन किताबों 'जाति और चुनाव', 'जाति और आरक्षण', 'जाति और राजनीति' का लोकार्पण हुआ। यह तीनों किताबें देश के चुनावी लोकतंत्र को समझने में बहुत उपयोगी हैं। इनमें भारत में जाति और लोकतंत्र में उसकी भूमिका पर अनेक लेख संकलित किए गए हैं। इस शृंखला की तीन किताबों में से एक 'जाति और चुनाव' अरविंद मोहन ने ख़ुद लिखी है। वहीं शेष दोनों उन्होंने सम्पादित की है। कार्यक्रम के तीसरे सत्र में मंगलेश डबराल, ओमप्रकाश वाल्मीकि और कुमार विकल की सम्पूर्ण कविताएँ संग्रहों का लोकार्पण हुआ। इस सत्र में अल्मा डबराल, गंगा सहाय मीणा, मदन कश्यप, विष्णु नागर, डॉ. बजरंग बिहारी तिवारी और प्रो. रविकान्त मौजूद रहे। इसके बाद लोकप्रिय युवा कवि जसिंता केरकेट्टा की प्रेम कविताओं के संग्रह 'प्रेम में पेड़ होना' का लोकार्पण हुआ। कार्यक्रम के अगले सत्र में 'मृत्यु और हँसी' उपन्यास पर देवेश ने लेखक प्रदीप अवस्थी से उपन्यास के कथानक पर बातचीत की। कार्यक्रम के अंतिम सत्र में कबीर संजय के कहानी संग्रह 'फेंगशुई' पर बातचीत हुई। बातचीत में लेखक ने कहा कि मैं दिल्ली में रहता हूँ। मैंने महानगरीय जीवन, दिल्ली मेट्रो का क्राउड और शहरी संघर्ष को क़रीब से देखा है और उसी को इस संग्रह में दिखाने की कोशिश की है। विश्व पुस्तक मेले के दूसरे दिन की शुरुआत 'भविष्य के पाठक' विषय पर परिचर्चा से हुई। इस सत्र में अणुशक्ति सिंह, जय प्रकाश कर्दम, राकेश रेणु, विनोद तिवारी तथा तशनीफ हैदर बतौर वक्ता मौजूद रहे। इसके बाद प्रज्ञा के उपन्यास 'काँधों पर घर' और अंकिता आनंद के कविता संग्रह 'अब मेरी बारी' का लोकार्पण हुआ। वहीं 'संघर्ष नर्मदा का', 'अगम बहै दरियाव' और 'रहमानखेड़ा का बाघ' किताबों पर बातचीत हुई। कार्यक्रम के अंतिम सत्र में लेखक से मिलिए कार्यक्रम में कथाकार चन्द्रकान्ता ने पाठकों से संवाद किया। सोमवार को राजकमल प्रकाशन समूह के स्टॉल 'जलसाघर' में 'लेखक से मिलिए' सत्र में वरिष्ठ कथाकार मैत्रेयी पुष्पा से संवाद के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ। इसके बाद सॉनेट मंडल के कविता संग्रह 'लौटती दोपहरें'; नासिरा शर्मा के कहानी संग्रह 'सुनहरी उँगलियाँ'; अदनान कफ़ील दरवेश के कविता संग्रह 'नीली बयाज' और चंचल चौहान की किताब 'साहित्य का दलित सौन्दर्यशास्त्र' का लोकार्पण हुआ। वहीं बलजिन्दर नसराली के पंजाबी भाषा से अनूदित उपन्यास 'अम्बर परियाँ' पर बातचीत हुई। राजकमल प्रकाशन के सीईओ आमोद महेश्वरी ने बताया कि इस बार विश्व पुस्तक मेले में बिक्री में नया रुझान देखने को मिला है। राजकमल की क्लासिक किताबें तो पाठकों की पहली पसन्द हैं ही साथ में अब पुस्तकप्रेमियों की रुचि बाक़ी विधाओं की किताबें पढ़ने में भी बढ़ रही है। इस बार दलित और आदिवासी विमर्श, स्त्री-विमर्श समेत विभिन्न विमर्शों की किताबें और यात्रा-वृत्तान्त, संस्मरण जैसी कथेतर किताबों की माँग ज़्यादा आ रही है।

वरिष्ठ कथाकार मैत्रेयी पुष्पा ने कहा कि वे जल्द ही लिखेंगी प्रेम पर उपन्यास

'जलसाघर' में आयोजित कार्यक्रम के पहले सत्र 'लेखक से मिलिए' कार्यक्रम में वरिष्ठ कथाकार मैत्रेयी पुष्पा से धर्मेंद्र सुशांत ने बातचीत की। चर्चा के दौरान उन्होंने कहा, "एक समय

था जब माना जाता था कि स्त्रियाँ उस तरह नहीं लिख सकतीं जिस तरह पुरुष लिखते हैं। मेरी पीढ़ी की स्त्री लेखकों ने कई बंधन तोड़े हैं और बंधन तोड़ना ज़रूरी भी है।" अपने उपन्यास की नायिकाओं के बारे में बातचीत करते हुए उन्होंने कहा, "मेरी सभी नायिकाओं ने मेरे उपन्यास पढ़े हैं, उनमें निर्णय लेने की क्षमता बनी है। कुछ तो अभी प्रधान भी हैं। आज मैं जब उनसे बात करती हूँ तो वे कहती हैं बीबी जी आपने हमें लिख दिया है तो अब हम वैसे थोड़ी ही रहेंगी।" वहीं अगली रचना के बारे में पूछने पर उन्होंने कहा कि उन्होंने प्रेम के विषय में कम लिखा है। लेकिन भविष्य में वे जल्द ही प्रेम पर एक उपन्यास लिखेंगी। कार्यक्रम के अंतिम सत्र में नासिरा शर्मा के कहानी संग्रह 'सुनहरी उँगलियाँ' का लोकार्पण हुआ। इस दौरान वार्ताकार मनोज कुमार पांडेय ने कहा कि इस संग्रह की सभी कहानियाँ जो हाशियाई तबक़ा है उन्हीं के इर्द-गिर्द घूमती हैं। वहीं लेखक ने कहा कि "सियासत के बाज़ार में आम लोगों की आँखों पर पर्दा डाल दिया जाता है और चोर दरवाज़े से सब कुछ चलता रहता है। मैंने इन कहानियों में उसी सच को दिखाने की कोशिश की है।" उन्होंने बताया कि आज इस तरह के सवालों को उठाने की ज़रूरत है वरना हम आने वाली जेनरेशन को कुछ नहीं दे पाएँगे। चौथे दिन मंगलवार को राजकमल प्रकाशन समूह के स्टॉल 'जलसाघर' में छह सत्रों में कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस दौरान शहादत के कहानी संग्रह 'कर्फ़्यू की रात'; मृणाल पाण्डे की किताब 'हिन्दी पत्रकारिता : एक यात्रा' और सुजाता पारमिता की किताब 'मानसे की जात' का लोकार्पण हुआ। वहीं हेमन्त देवलेकर के कविता संग्रह 'हमारी उम्र का कपास'; महेश कटारे के उपन्यास 'भवभूति कथा' और शिवानी सिब्बल के उपन्यास 'सियासत' पर बातचीत हुई।

हिन्दी मीडिया ने अभी अपनी क्षमता को पहचाना नहीं : मृणाल पाण्डे

कार्यक्रम के अगले सत्र में मृणाल पाण्डे की किताब 'हिन्दी पत्रकारिता : एक यात्रा' का लोकार्पण हुआ। इस सत्र में प्रमोद जोशी और हर्ष रंजन ने किताब पर लेखक से बातचीत की। सत्र का संचालन मनोज कुमार पांडेय ने किया। इस दौरान मृणाल पाण्डे ने कहा "हिन्दी भाषा की प्रकृति रही है कि वह जिस देश में जाती है उसी में रच जाती है। इस तरह का परिवर्तन अच्छा संकेत नहीं है जब तक प्रतिरोध नहीं हो सकता।" वर्तमान में मीडिया की स्थिति पर बात करते हुए उन्होंने कहा, "मीडिया में आज मुजरा हो रहा है। स्त्री पत्रकारों को टी.वी. में गुड़िया बनाकर रख दिया है। दु:ख की बात है यह हमारे युग का प्रतिबिंब है।" वहीं पर हिन्दी पत्रकारिता के विषय में मृणाल पाण्डे ने कहा कि हिंदी को पैसों की ज़रूरत नहीं है, शोहरत की ज़रूरत नहीं है बल्कि धीरज की ज़रूरत है। हिन्दी ने तकनीक की बेहतरीन हुनर हासिल कर लिया है बस अपनी क्षमता को नहीं पहचाना। हमें इसे समझना होगा। हमें सर्वाधिक संप्रेषण अपनी भाषा में ही करना होगा और भाषा के प्रति हीन भावना से बाहर आना होगा।"

विश्व पुस्तक मेले में बुधवार को राजकमल प्रकाशन समूह के स्टॉल 'जलसाघर' में एस. इरफ़ान हबीब द्वारा सम्पादित किताब 'भारतीय राष्ट्रवाद : एक अनिवार्य पाठ' पर परिचर्चा के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। इसके बाद मोहनदास नैमिशराय की किताब 'क्रांतिकारी ज्योतिराव फुले' और एकता सिंह की किताब 'तलाश खुद की' का लोकार्पण हुआ। वहीं चर्चित उपन्यासकार भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों और वरिष्ठ कथाकार नासिरा शर्मा की किताबों पर बातचीत हुई। इस दौरान पाठकों ने बहुत रुचि से लेखकों को सुना और उनके साथ संवाद किया। पहले सत्र में एस. इरफ़ान हबीब द्वारा संपादित पुस्तक 'भारतीय राष्ट्रवाद : एक अनिवार्य पाठ' पर परिचर्चा हुई। बातचीत में एस. इरफ़ान हबीब ने कहा, "देशभक्ति एक भावना है जो हर समय हर व्यक्ति के लिए ज़रूरी है बल्कि राष्ट्रवाद एक राजनीतिक अवधारणा है। कई बार हम देशभक्ति और राष्ट्रवाद दोनों को एक ही मानते हैं पर यह दोनों बहुत अलग हैं।" कार्यक्रम के दूसरे सत्र में नासिरा शर्मा की चार किताबों के संदर्भ में 'औरतनामा' विषय पर परिचर्चा हुई। इस सत्र में अशोक तिवारी और हरियश राय बतौर वक्ता मौजूद रहे। परिचर्चा के दौरान नासिरा शर्मा ने कहा, "आज़ादी के बाद जो नियोजन हुआ उससे औरतों को ज़्यादा अवसर मिले जिससे औरत और पुरुष के बीच बैलेंस आया है। कुछ मामलों में शेष पृष्ठ 14 पर

शेष पृष्ठ 12 पुस्तक मेला...

स्त्री आगे भी बढ़ गई है लेकिन औरत सिक्योर नहीं है। कोई औरत जब किसी ओहदे पर होती है तो उस कुर्सी की तो इज़्ज़त होती है पर औरत की इज़्ज़त नहीं होती है।" अगले सत्र में मोहनदास नैमिशराय की किताब 'क्रांतिकारी ज्योतिराव फुले' का लोकार्पण हुआ। इस सत्र के दौरान डॉ. रूपचन्द्र गौतम, रवींद्र और दिनेश उपस्थित रहे। वहीं कार्यक्रम का संचालन सुदेश कुमार ने किया। अगले सत्र में भगवानदास मोरवाल के उपन्यास 'मोक्षवन' पर पवन साव ने उपन्यासकार से बातचीत की। परिचर्चा के दौरान भगवानदास मोरवाल ने कहा, "मैं फ़ील्ड वर्क और डॉक्यूमेंटेशन दोनों तरह के शोध करता हूँ। इस रचना के दौरान मैंने वृंदावन के मंदिरों, घाटों और भजनाश्रमों को बहुत नज़दीक से देखा और वहाँ की विधवा औरतों की कहानी को दर्शाने का प्रयास किया है।" विश्व पुस्तक मेले के छठे दिन वर्ष 2023 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित लेखक संजीव ने राजकमल प्रकाशन समूह के मंच से यह घोषणा की है कि उनकी सभी किताबें अब राजकमल प्रकाशन समूह से प्रकाशित होंगी। उन्होंने कहा कि राजकमल प्रकाशन समूह पहले से हमारा प्रकाशक है। मेरे कई उपन्यास इन्होंने प्रकाशित किए हैं। प्रतिनिधि कहानियाँ प्रकाशित की हैं। इनसे पुराना संबंध और वर्षों का विश्वास है। इसी विश्वास के कारण मैंने राजकमल को अपनी सभी पुस्तकों के प्रकाशन के लिए अधिकृत किया है। मुझे उम्मीद है कि मेरे इस निर्णय से मेरे तमाम पाठकों को भी सुविधा होगी कि उन्हें मेरी सभी किताबें एक ही जगह सुलभ हो जाएँगी। इससे पहले, 'जलसाघर' में राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित संजीव के नए कहानी संग्रह 'प्रार्थना' का लोकार्पण हुआ। इस दौरान मंच पर ममता कालिया, वीरेन्द्र यादव, सैय्यद मुहम्मद इरफ़ान, अब्दुल बिस्मिल्लाह, बलराम, मनोज कुमार पांडेय, धर्मेन्द्र सुशान्त उपस्थित रहे। जलसाघर में आयोजित कार्यक्रम के अन्य सत्रों में गुरुवार को सुरेंद्र प्रताप के उपन्यास 'मोर्चेबन्दी'; अनीता गोपेश द्वारा संपादित किताब 'कहानियाँ दूसरे दुनिया की'; राहुल श्रीवास्तव के कहानी संग्रह 'पुई' और यतीश कुमार की किताब 'बोरसी भर आँच' का लोकार्पण हुआ। वहीं विपिन गर्ग द्वारा सम्पादित मीर तक़ी मीर की ग़ज़लों और रुबाइयों के संग्रह 'चलो टुक मीर को सुनने' और डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय की किताब 'जयशंकर प्रसाद : महानता के आयाम' पुस्तक पर बातचीत हुई। कार्यक्रम के दौरान पाठकों ने लेखकों से संवाद किया।

विश्व पुस्तक मेले में शुक्रवार को राजकमल प्रकाशन समूह के स्टॉल पर विश्वनाथ त्रिपाठी की नई किताब के लोकार्पण के साथ ही उनका जन्मदिन मनाया गया। जलसाघर में विश्वनाथ त्रिपाठी नई आलोचनात्मक कृति 'हरिशंकर परसाई : देश के इस दौर में' और हरिशंकर परसाई के अप्रकाशित व्यंग्य संग्रह 'भोलाराम का जीव' का लोकार्पण त्रिपाठी जी के हाथों हुआ। इस दौरान त्रिपाठी जी ने अपने जीवन से जुड़े आत्मीय संस्मरण साझा किए। उन्होंने कहा, "आज तक मैंने कभी अपनी किसी किताब का लोकार्पण नहीं कराया है, यह तो अशोक जी का प्रेम और आत्मीयता है कि मैं उनका अनुरोध अस्वीकार नहीं कर पाया। राजकमल से मेरा लम्बे अरसे से संबंध रहा है जो नित नए-नए प्रतिमान रच रहा है। मुझे ओमप्रकाश जी याद आते हैं, उन्होंने जिस आस के साथ इस प्रकाशन की शुरुआत की थी अशोक जी ने उसे बरक़रार रखा है। मेरी बहुत सी किताबें यहाँ से प्रकाशित हैं, राजकमल से किताबें प्रकाशित होना किसी सम्मान और पुरस्कार से कम नहीं हैं। मेरे जन्मदिन पर इस आयोजन के लिए मैं अभिभूत हूँ।" इस दौरान राजकमल प्रकाशन समूह के अध्यक्ष अशोक महेश्वरी ने कहा, "जब मैंने प्रकाशन व्यवसाय में कदम रखा था उस समय से ही त्रिपाठी जी का स्नेह और आशीर्वाद लगातार मुझे मिलता रहा है। आज त्रिपाठी जी का जन्मदिन भी है। हम यह कामना करते हैं कि वह शतायु हों और उनका स्नेह हम सबको ऐसे ही मिलता रहे।" इससे पहले, शुक्रवार को जलसाघर में आयोजित कार्यक्रम के पहले सत्र में बसंत त्रिपाठी के कविता संग्रह 'घड़ी दो घड़ी' पर बातचीत हुई। इस सत्र में संजीव कौशल ने उनसे बातचीत की। दूसरे सत्र में गरिमा श्रीवास्तव की किताब 'देह ही देश' का लोकार्पण हुआ। इस सत्र में अभय कुमार दुबे और निशा नाग की विशिष्ट उपस्थिति रही। सत्र का संचालन पवन साव ने किया। परिचर्चा के दौरान वक्ताओं ने कहा कि यह डायरी युद्ध की उस विभीषिका को दर्शाती है जो स्त्रियों की देह पर लड़े गए हैं। लेखक ने कहा, "इस पुस्तक की रचना के दौरान मैंने उनसे बातचीत की जिनके बारे में मैं नहीं जानती थी। मैंने उनसे सहज बातचीत की है, हालाँकि यह यात्रा मेरे लिए सरल नहीं थी। मुझे कई जगह तिरस्कार और अपमान भी झेलने पड़े क्योंकि उत्पीड़क अपनी बात बताने को तैयार नहीं थे। इस यात्रा के दौरान मैंने यही पाया कि हर जिस्म दुखी है, हर आत्मा झूठी है।" अगले सत्र में संपत सरल के नये व्यंग्य संग्रह 'निठल्ले बहुत बिजी हैं' का लोकार्पण हुआ। इस सत्र में रमाशंकर सिंह ने लेखक से बातचीत की। कार्यक्रम के दौरान व्यंग्यकार संपत सरल ने नए संग्रह से अंशपाठ किया जिससे श्रोताओं में ठहाके फूट पड़े। कार्यक्रम के अगले सत्र में पल्लवी त्रिवेदी की कई किताब 'ज़िक्रे यार चले : लव नोट्स' का लोकार्पण हुआ। इस सत्र में सुदीप्ति ने लेखक से बातचीत की। कार्यक्रम के अंतिम सत्र में मैनेजर पांडेय की किताब 'दारा शुकोह : संगम-संस्कृति का साधक' का विश्वनाथ त्रिपाठी जी के हाथों लोकार्पण हुआ। इस मौके पर त्रिपाठी जी ने कहा कि मैनेजर पांडेय जी वैसे तो उम्र में मुझसे क़रीब दस साल छोटे थे। लेकिन उनका स्वास्थ्य कभी स्थिर नहीं रहा। इसी वजह से वह बहुत जल्दी दुनिया से चले गए। वहीं संचालक धर्मेन्द्र सुशान्त ने किताब का परिचय देते हुए कहा कि यह किताब मैनेजर पांडेय की एक बड़ी योजना का हिस्सा है। वह दारा शुकोह के जीवन और देश की सांस्कृतिक एकता को बनाए रखने के लिए दिए गए योगदान पर और भी काम करना चाहते थे लेकिन उनके असामयिक निधन के कारण वह योजना अधूरी रह गई। विश्व पुस्तक मेले में राजकमल प्रकाशन समूह के जलसाघर में आठवें दिन निर्मल वर्मा और गगन गिल की किताबों का लोकार्पण हुआ। इस दौरान गगन गिल ने कहा, "पिछले 18 सालों में मुझे कई लोगों के साथ काम करने का मौक़ा मिला मगर जैसा सामंजस्य राजकमल और अशोक जी के साथ था वैसा अन्यत्र कहीं नहीं मिला। मैं अभिभूत हूँ कि आज इतने वर्षों बाद निर्मल जी और मेरी किताबें एक नए कलेवर के साथ राजकमल से प्रकाशित हो रही हैं। हमेशा से उत्कृष्ट रचना प्रकाशित करने की राजकमल प्रकाशन की परम्परा रही है, निर्मल जी के साहित्य के लिए अशोक जी और राजकमल से उचित कोई प्रकाशक नहीं हो सकता, ऐसा मेरा विश्वास है।" इस दौरान राजकमल प्रकाशन समूह के अध्यक्ष अशोक महेश्वरी ने कहा, "मुझे निर्मल जी से स्नेह और बहुत प्रेम मिला है मैं उसे कभी भुला नहीं सका। वर्षों पहले जिन परिस्थितियों में निर्मल जी की किताबें अन्यत्र छपने गईं, वह मेरे लिए दुखद और राजकमल प्रकाशन के लिए अप्रिय प्रसंग बना रहा। ख़ैर, हमने अपनी भूल को सुधारा है। मुझे निजी तौर पर, और सांस्थानिक रूप से भी बहुत प्रसन्नता हो रही है कि निर्मल जी और गगन जी की सभी किताबें अपने मूल प्रकाशन में वापस लौट आई हैं।" इससे पहले, जलसाघर में आयोजित कार्यक्रम के पहले सत्र में शैलजा पाठक की किताब 'कमाल की औरतें' का लोकार्पण हुआ। इस सत्र में ममता कालिया और रामजी तिवारी की विशिष्ट उपस्थिति रही और कार्यक्रम का संचालन सुदीप्ति ने किया। दूसरे सत्र में सुमन केशरी की किताब 'कविता के देश में' पर लीलाधार मंडलोई ने लेखक से बातचीत की। कार्यक्रम के अगले सत्र में प्रत्यक्षा के नए कहानी संग्रह 'अतर' का लोकार्पण हुआ। इस सत्र में प्रियदर्शन, प्रभात रंजन और सुदीप्ति बतौर वक्ता मौजूद रहे। इसके बाद सोरित गुप्तो की किताब 'महामारी का रोजनामचा' पर विनीत कुमार ने उनसे बातचीत की। अगले सत्र में विनय कुमार के काव्य नाटक 'आत्मज' का लोकार्पण हुआ। इस सत्र में अजय कुमार, ज्योतिष जोशी और प्रयाग शुक्ल की विशिष्ट उपस्थिति रही। सत्र का संचालन आशीष मिश्र ने किया। इसके बाद देवेश की नई किताब 'मेट्रोनामा : हैशटैग वाले किस्से' का लोकार्पण हुआ। इस सत्र में रवीश कुमार और विनीत कुमार भी उपस्थित रहे। अगले सत्र में विनीत कुमार की नई किताब 'मीडिया का लोकतंत्र' का लोकार्पण हुआ जिसमें रवीश कुमार ने लेखक से बातचीत की। परिचर्चा के दौरान रवीश कुमार ने कहा, "हिन्दी में ऐसी किताब लिखी गई है यह खुशी की बात है जो अन्य भाषाओं में लिखी गई श्रेष्ठ कविताओं के समकक्ष है। इस किताब को पढ़कर हिन्दी पाठकों, मीडिया प्रेमियों में संभावनाओं के द्वार खुलेंगे। मुझे विश्वास है कि इसे पढ़कर निश्चित रूप से आप टीवी और मीडिया के बारे में कुछ नया और महत्त्वपूर्ण सीखेंगे।" इसके बाद नेहा नरूका

के कविता संग्रह 'फटी हथेलियाँ' पर बातचीत हुई। इस सत्र के दौरान रश्मि भारद्वाज ने कवि से बातचीत की। वहीं कार्यक्रम के अंतिम सत्र में सौम्य मालवीय के कविता संग्रह 'एक परित्यक्त पुल का सपना' का लोकार्पण हुआ। इस दौरान मंच पर मौजूद वक्ता असद जैदी ने कहा, "ये कविताएँ बीते दो-एक दशकों में उपजी बेचैनियों और निराशाओं को एक स्वर देने का प्रयास करती हैं। वक़्त की चोट को शब्दों में महसूसना चोट पर मरहम का ही काम नहीं करता, बल्कि उसे जिन्दा भी रखता है।" इसके बाद सौम्य ने अपने संग्रह से कुछ कविताओं का पाठ किया।

नौ दिन तक चले विश्व पुस्तक मेले रविवार को हुआ। आखिरी दिन भारी संख्या में लोग प्रगति मैदान पहुँचे। राजकमल प्रकाशन समूह के जलसाघर में दिन भर पुस्तकप्रेमियों की जमघट बना रहा। राजकमल प्रकाशन के कार्यकारी निदेशक आमोद महेश्वरी ने बताया कि इस बार विश्व पुस्तक मेले में पिछली बार की तुलना में किताबों की बिक्री बढ़ी है। हिन्दी के पाठक नई रुचियों के साथ किताबों की खरीदारी कर रहे हैं। विश्व पुस्तक मेला के आखिरी दिन राजकमल प्रकाशन समूह के स्टॉल 'जलसाघर' में तुम्हारी औकात क्या है पीयूष मिश्रा, वर्चस्व, बोलना ही है, काशी का अस्सी, जूठन, आपका बंटी, एक तानाशाह की प्रेमकथा, घुमक्कड़ शास्त्र, वैशालीनामा किताबों की बिक्री सर्वाधिक हुई। पहले सत्र में ज्ञान चतुर्वेदी के उपन्यास 'एक तानाशाह की प्रेमकथा' का लोकार्पण हुआ। इस सत्र में वीरेंद्र यादव, आलोक पुराणिक और अखिलेश बतौर वक्ता मौजूद रहे। परिचर्चा के दौरान लेखक ने कहा, "इस रचना के दरम्यान मैंने एक तानाशाह के दिमाग में उतरने की कोशिश की है, अपने देश को सर्वश्रेष्ठ दिखाने की उसकी जो प्रवृत्ति है, सत्ता और आम इंसान के प्रेम के बीच की जो केमिस्ट्री है वही इस उपन्यास में दिखाया है।" परिचर्चा के दौरान अखिलेश ने कहा, "यह एक जटिल संरचना और जटिल संवेदना का उपन्यास है।" वहीं आलोक पुराणिक ने कहा " वे मार्केट और इकोनॉमिक्स को समझते हैं और इस उपन्यास में उसे क्रिएटिविली एक्सप्रेस किया है। इस उपन्यास को सिर्फ़ व्यंग्य ही नहीं समझा जाना चाहिए, इसमें आज के पूरे परिवेश को देखा जा सकता है।" अगले सत्र में अशोक पंकज की किताब 'लोहिया के सपनों का भारत' पर बातचीत हुई। इस सत्र में बद्रीनारायण, रमाशंकर सिंह और ... की विशिष्ट उपस्थिति रही। अगले सत्र में कृष्णा सोबती की किताब 'वह समय, यह समय' का लोकार्पण हुआ। इस सत्र में अखिलेश, गरिमा श्रीवास्तव, रवीन्द्र यादव, आलोक पुराणिक की विशिष्ट उपस्थिति रही। परिचर्चा के दौरान गरिमा श्रीवास्तव ने कहा "इस उपन्यास को देखकर मैं कह सकती हूँ कि कृष्णा सोबती ज़िंदगीनामा का दूसरा भाग लिखना चाहती थीं। जहाँ ज़िंदगीनामा ख़त्म हो रहा है वहाँ से यह उपन्यास शुरू हो रहा है।" कार्यक्रम के अगले सत्र में मनोज पाण्डेय के नए कहानी संग्रह 'प्रतिरूप' का लोकार्पण हुआ। इस सत्र में ज्ञान चतुर्वेदी, अखिलेश, वीरेन्द्र यादव बतौर वक्ता मौजूद रहे। कार्यक्रम के दौरान वक्ताओं ने कहा, "मनोज जी की कहानियाँ पुराने डिपार्ट से अलग हैं, इनकी कहानियों में पुरानी साहित्य परंपरा की सोच है, परंतु रचना शैली इनकी अपनी है। मुझे खुशी है कि ये उस पुराने साँचे को तोड़ पा रहे हैं।" आशा प्रभात के उपन्यास 'उर्मिला' पर बातचीत दूसरे सत्र में आशा प्रभात के उपन्यास 'उर्मिला' पर बातचीत हुई। कार्यक्रम के दौरान आशा प्रभात ने कहा "युग कोई भी हो समाज और उसमें स्त्रियों की स्थिति नहीं बदली है। मेरे उपन्यास में दर्शाए गए पात्र पौराणिक हैं लेकिन अलौकिक नहीं हैं, मैंने एक मानवीय स्त्री को चिह्नित किया है।" अगले सत्र में राजेश के उपन्यास 'वर्चस्व' पर शम्स ताहिर खान ने उनसे बातचीत की। कार्यक्रम के अगले सत्र में उपासना के कहानी संग्रह 'एक जिन्दगी... एक स्क्रिप्ट भर!' का लोकार्पण हुआ। इस सत्र में अखिलेश और अनुराधा गुप्ता बतौर वक्ता मौजूद रहे। कार्यक्रम के दौरान वक्ताओं ने कहा कि उपासना कहानियाँ तरल भाषा, सन्तुलित गठन और विवेकपूर्ण सूक्ष्मता के साथ गुँथी-बुनी हैं। कार्यक्रम का अंतिम सत्र सोनी पांडेय के उपन्यास 'सुनो कबीर' के लोकार्पण और बातचीत का रहा। इस सत्र के दौरान लेखक के साथ मंच पर मृत्युंजय, देवेश और रश्मि भारद्वाज मौजूद रहे। बातचीत में सोनी पांडेय ने कहा, "यह रचना मेरे महबूब शहर आजमगढ़ को समर्पित है। मैं अपने शहर को जितना समझ पाई वही मैंने इस उपन्यास में दिखाया है।"

शेष पृष्ठ 11 लखनऊ, किताब उत्सव...

एक किताब का लोकार्पण हुआ। इस किताब का संपादन युवा कथाकार आलोचक राजीव कुमार ने किया है। कार्यक्रम में अपनी बात रखते हुए सिद्ध आलोचक अनिल त्रिपाठी ने कहा कि इस समय वह सारी बातें सत्य साबित हो रही हैं जिनकी तरफ़ इस उपन्यास में अखिलेश ने इशारा किया था। इन दस सालों में ये उपन्यास एक महा आख्यान बनता गया है। वीरेंद्र यादव ने कहा कि ये निर्वासन कई स्तरों पर घटित होता है। यहाँ भौतिक निर्वासन है जहाँ पर लोग रोजी-रोटी की तलाश में गिरमिटिया मजदूर बन कर दुनिया के दूसरे कोनों में जा रहे हैं। दूसरा निर्वासन इस व्यवस्था का है जहाँ जातिगत शोषण के चक्र में फँसकर लोग अपने आप से ही निर्वासित हो रहे हैं। तीसरी तरफ भौतिकता का एक चक्रव्यूह है जिसके मायावी चक्र में फँसकर लोग आत्म के स्तर पर निर्वासित हो रहे हैं। ज़ाहिर है कि इन सभी निर्वासनों के साथ एक विडंबना भी लगातार बनी हुई है। इस सत्र का संचालन युवा कथाकार सबाहत आफ़रीन ने किया।

चौथे दिन का पहला सत्र पूर्व मुख्य सचिव, उत्तर प्रदेश आलोक रंजन की किताब 'जिलाधिकारी' पर बातचीत का रहा। इस सत्र में अशोक शर्मा ने आलोक रंजन से बातचीत की। इस सत्र का संचालन सुरभि श्रीवास्तव ने किया। कार्यक्रम के अगले सत्र में वरिष्ठ कथाकार वीरेंद्र सारंग से चर्चित पत्रकार संतोष वाल्मीकि ने बातचीत की। ये बातचीत वीरेंद्र सारंग के उपन्यास 'हाता रहीम' पर केंद्रित रही। अगले सत्र में वरिष्ठ आलोचक वीरेंद्र यादव से उनकी किताब 'उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता' पर केंद्रित बातचीत प्रोफ़ेसर सूरज बहादुर थापा ने की। बातचीत के क्रम में वीरेंद्र यादव ने कहा कि प्रतिनिधित्व की समस्या अभी भी विकराल रूप में बनी हुई है। ये इससे नहीं हल होगी कि कुछ शीर्ष पदों पर दलित या आदिवासी पहुँच गए हैं। ये सिर्फ़ प्रतीकात्मक उपस्थिति है। प्रतिनिधित्व का सही हाल जानने के लिए हमको वास्तविक आँकड़ों के पास जाना होगा। अगला सत्र हिन्दी के मूर्धन्य लेखक भगवतीचरण वर्मा के व्यक्तित्व और कृतित्व पर केंद्रित रहा। इस सत्र में वरिष्ठ आलोचक वीरेंद्र यादव, वरिष्ठ संस्कृतिकर्मी और नाटककार राकेश, रंगकर्मी गोपाल सिन्हा और भगवतीचरण वर्मा के पौत्र और कवि कथाकार चंद्रशेखर वर्मा ने भगवती बाबू के रचना कर्म और जीवन पर अपनी बातचीत रखी। अगला सत्र पूर्व आईजी, राजेश पांडेय की किताब 'वर्चस्व' पर केंद्रित रहा। इस सत्र में पत्रकार भूपेन्द्र पांडेय ने उनसे बातचीत की।

किताब उत्सव के चौथे दिन का अंतिम सत्र काव्य संध्या का रहा। इस सत्र में अनिल त्रिपाठी, आलोक पराड़कर, प्रीति चौधरी, सीमा सिंह, सुभाष राय, ज्ञान प्रकाश चौबे और नलिन रंजन सिंह ने कविताओं का पाठ किया। किताब उत्सव के आखिरी दिन कार्यक्रम का पहला सत्र उत्कर्ष शुक्ल की किताब 'रहमान खेड़ा का बाघ' के लोकार्पण का रहा। कार्यक्रम की शुरुआत में मोहम्मद एहसान ने किताब से कुछ अंशों का रोचक पाठ किया। इसके बाद किताब पर उत्कर्ष शुक्ल से देवेंद्र सिंह ने बात-चीत की। अगले सत्र में रविकांत द्वारा संपादित ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'सम्पूर्ण कविताएँ' और 'प्रतिनिधि कविताएँ' तथा प्रमोद रंजन द्वारा संपादित 'बहुजन साहित्य की सैद्धांतिकी' का लोकार्पण प्रो. रमेश दीक्षित तथा वीरेंद्र यादव ने किया। इस अवसर पर रविकांत और प्रमोद रंजन भी मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन युवा कवि सीमा सिंह ने किया। अगला सत्र श्रीलाल शुक्ल पर केन्द्रित था। कार्यक्रम की शुरुआत में युवा कवि नूर आलम ने श्रीलाल शुक्ल की चर्चित कहानी 'एक चोर की कहानी' का पाठ किया। श्रीलाल शुक्ल के पौत्र उत्कर्ष शुक्ल ने श्रीलाल जी के निजी जीवन की बहुत सारी यादें और किस्से साझा किए। वरिष्ठ कथाकार और 'तद्भव' के संपादक अखिलेश ने श्रीलाल शुक्ल के कृतित्व पर बोलते हुए कहा कि श्रीलाल शुक्ल अपने उपन्यास 'राग दरबारी' में गाँव को लेकर एक मोहक और रोमानी दृष्टिकोण को पूरी तरह से उलट देते हैं। वीरेंद्र यादव और रमेश दीक्षित ने राजकमल प्रकाशन के प्रति और इन किताबों के संपादकों के प्रति आभार व्यक्त किया कि वे इस बेहद ज़रूरी काम को पूरी जिम्मेदारी से कर रहे हैं।

कार्यक्रम के अगले सत्र में 'लखनऊ की मोहल्लेदारी' विषय पर विख्यात युवा दास्तानगो हिमांशु वाजपेयी से पत्रकार, संपादक आलोक पराड़कर ने बातचीत की।

जब किसी उपन्यास का एक पात्र ज़िन्दा हो जाए!

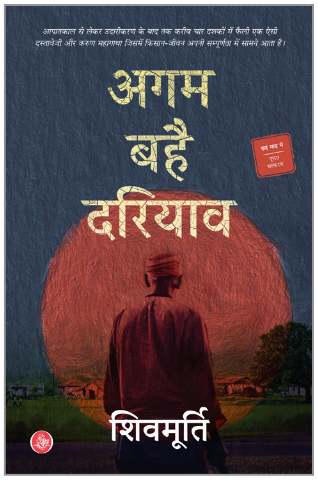

मुझे बहुत आश्चर्य हुआ जब उस शाम फ़ोन पर आवाज़ आई-मैं मंगल सिंह बोल रहा हूँ। हुबहू मंगल सिंह की आवाज़। —मंगल सिंह?

—हाँ, वही मंगल सिंह जिसे आपने अपने उपन्यास 'अगम बहै दरियाव' में मृत घोषित कर दिया है। जिसकी हत्या के जुर्म में मेरा साथी गोवर्धन आजीवन क़ैद की सजा काट रहा है।

—लेकिन विगत पैंतीस-चालीस साल से तो आप का कोई अता पता नहीं था। न कभी बातचीत। न मेल न मुलाक़ात तो मैं क्या मानता। वह तो अभी कथाकार देवेंद्र ने बताया कि आप से उनकी बातचीत हुई है और उन्हीं से आपको पता चला है कि मैंने अपने उपन्यास में आपकी हत्या का उल्लेख किया है।

—सही बात है। देवेंद्र जी ने ही मुझे इसकी ख़बर दी और आपका फ़ोन नम्बर दिया। और तभी से मैं वह उपन्यास खोज रहा हूँ। कि देखूँ और क्या कुछ लिखा है आपने?

—खोजने की क्या ज़रूरत है? अपना पता दीजिए। मैं अपने प्रकाशक से कहकर खुद भेजवा दूँगा।

—लेकिन पता देने की बात वे गोल कर गये। यह उनकी पुरानी आदत है। सन् 1983 या चौरासी में जब उनके साथ दुर्घटना हुई थी और उनके पैर टूटे थे तब भी वे सरकारी अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती नहीं हुए, प्राइवेट डाक्टर से प्लास्टर चढ़वाकर शहर से बाहर बंद पड़े एककार ख़ाने में रह कर हड्डियाँ जुड़ने का इन्तज़ार करते रहे। यह तो नहीं कहूँगा कि छिपे रहे लेकिन किसी को सूचना भी नहीं दी। मुझे तो इसलिए बताया था कि मुझ पर ही उनके लिए दोनों मीटिंग खाना भेजवाने की ज़िम्मेदारी डाली गई थी। और एक शाम खाना लेकर जाने वाले आदमी ने लौट कर बताया कि मंगल सिंह ग़ायब हैं। उनके लिए मैंने जो टेबल फ़ैन भेजवाया था वह मुझे आज तक वापस नहीं मिला।

— मंगल सिंह का कार्यस्थल बदलता रहा और मेरा भी। बाद में वे देवेंद्र जी के सम्पर्क में आए। देवेंद्र जी की चर्चित कहानी 'क्षमा करो हे वत्स' में भी मंगल सिंह मौजूद हैं।

— मंगल सिंह फ़ोन पर कह रहे थे—मुझे आपसे और कोई शिकायत नहीं है। देवेंद्र जी ने बताया है कि आपने मेरा नाम भी सही लिखा है, मेरा काम भी सही लिखा है। मेरी जाति भी सही लिखा है। मेरा जिला भी सही लिखा है। बस मेरी हत्या करा दी है।

—भाई,चालीस साल से जिस आदमी का कोई अता-पता न हो उसे मृत न मानता तो क्या करता। अब आप अपना कोई फ़ोटो या वीडियो भेजिये जिससे विश्वास हो कि आप ही असली मंगल सिंह हैं तो मुझे आपको ज़िंदा करने में कितना समय लगेगा? लेखक तो स्वयंभू होता है।

—आप मुझे आवाज़ से नहीं पहचान रहे हैं?

—पहचान रहा हूँ तब भी बिना प्रत्यक्ष देखे पूरी तरह यक़ीन करना संभव नहीं है। आजकल आर्टिफिसियल ईन्टेलिजेंस का जमाना है। इसकी मदद से किसी की भी आवाज़ की हूबहू नक़ल की जा सकती है। आकर साक्षात दर्शन दीजिए या फ़ोटो भेजिये।

— अभी तक तो कोई फ़ोटो या वीडियो आया नहीं। कथाकार देवेंद्र जी ने कल आश्वासन दिया है कि जल्दी ही उन्हें सशरीर बुलाएँगे।

— आज कथाकार देवेंद्र पर सेतु प्रकाशन से आई उनकी किताब 'देवेंद्र समग्र' पर आयोजित गोष्ठी में मुझे भी शामिल होना है। यदि उनके पास मंगल सिंह की फ़ोटो आ गई होगी तो लेकर शाम को यहाँ लगाऊँगा। मुझे भी देखने की उत्सुकता है कि जिन आँखों में आधी शताब्दी पहले हज़ार वाट के बल्ब जला करते थे वे अब कैसी दिखती हैं?

— मैंने फ़ोन काटने के पहले एक बार फिर मंगल भाई को आश्वस्त किया—सशरीर या फ़ोटो में देख लूँगा तो अविलंब जीवित कर दूँगा। लेखक के लिए मरे हुए को ज़िंदा करना या जीवित को मृत कर देना कौन सा मुश्किल काम है? — शिवमूर्ति

'मैंने गढ़ा है अपना पुरुष' काव्य-संग्रह से चर्चित कवि अनुपम सिंह को शीला सिद्धांतकर पुरस्कार देने की घोषणा हुई। लेकिन उन्होंने इसे स्वीकारने से मना किया। क्यों? पढ़िए उनकी विनम्र और स्पष्ट अस्वीकारोक्ति

शीला सिद्धान्तकर पुरस्कार की घोषणा हुई है। इसकी सूचना अख़बार की कटिंग के जरिए मुझ तक भी पहुँची। मुझ तक इसलिए पहुँची, क्योंकि इसमें मेरा भी नाम है। मैं चयन समिति के प्रति अपना आभार प्रकट करती हूँ कि उन्होंने मुझे पुरस्कृत करने के लिए चुना। मैं शीला सिद्धान्तकर जी की कविताओं और उनकी सहज स्त्री विषयक दृष्टि से भी थोड़ा-बहुत परिचित हूँ, इसलिए उनके नाम से दिए जाने वाले इस पुरस्कार के प्रति भी अपना सम्मान प्रकट करती हूँ। लेकिन, इस पर मेरी राय थोड़ा अलग बनी है। मैं समझती हूँ कि चयन समिति को भी इस दिशा में सोचना चाहिए था। शालू शुक्ल जी मुझसे वरिष्ठ हैं। निश्चित ही उनकी काव्य यात्रा भी मुझसे लंबी होगी। इसलिए यह उनका हक़ होना चाहिए कि वे इस पुरस्कार को सम्पूर्ण रूप से ग्रहण करें। इसी में, मैं उनका और पुरस्कार दोनों का सम्मान समझती हूँ। अपनी इसी समझदारी के आधार पर मैं ख़ुद को पुरस्कार से अलग कर रही हूँ। मैं यह समझती हूँ कि चयन समिति मेरे इस कदम को किसी प्रकार की धृष्टता नहीं समझेगी। तथा इसके इर्द-गिर्द जो लोग हैं, उनसे मेरे सम्बन्ध अधिक प्रगाढ़ ही होंगे। मैं अपनी ओर से शालू जी को हृदय से बधाई दे रही हूँ। आप भी उन्हें बधाई दें कि वे रचनात्मकता की राह पर निरन्तर बढ़ती रहें।

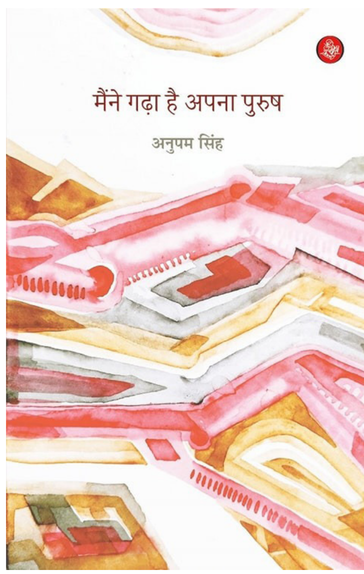

चर्चा में किताबें

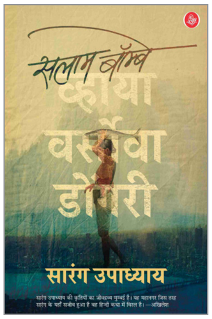

'सलाम बॉम्बे व्हाया वर्सोवा डोंगरी' जितना यूनिक नाम है उतना ही यूनिक उपन्यास भी। उपन्यास एक बैठक में पढ़ गया। यह इसके कथानक और प्रस्तुतीकरण की ताकत है। बेहद सधी हुई कहानी और बेहद उम्दा लेखन। प्रेम का एक ऐसा रंग जो अंदर तक भिगो देता है। जैसा कि गीत चतुर्वेदी इसके फ्लैप पर लिखते हैं कि ग्यारह किस्सों के जरिए यह उपन्यास मुम्बई के निम्न मध्यवर्गीय जीवन का मिनिएचर बनाते हुए हिन्दी कथा साहित्य में एक दुर्लभ और विरल पाठकीय अनुभव की सृजना करता है, सौ प्रतिशत सही सिद्ध हुआ। **—रामकुमार सिंह, *फ़ेसबुक***

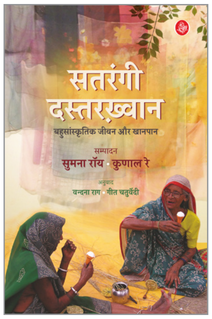

The book "Satrangi Dastarkhwan" takes readers on a delightful exploration of Indian cuisine that extends beyond typical cookbooks. Edited by Sumna Roy and Kunal Ray, with translations by Vandana Rag and Geet Chaturvedi, this book is a fascinating journey through the interplay of history, culture, and geography that shapes India's culinary identity.

— Ashutosh Kumar Thakur, *FIRSTPOST.com*

इनकी कहानियाँ पढ़ते हुए आप कब यथार्थ के बीच से कल्पना की दुनिया में प्रवेश कर जाते हैं और उसमें भी यथार्थ का स्वाद लेने लगते हैं, पता ही नहीं चलता। उनकी कहानियों में एक ओर वर्तमान समय की क्रूर वास्तविकता है तो दूसरी ओर बचपन की मासूमियत भी। इन्हें पढ़ने के बाद महसूस होता है कि आदमी पहले आदमी होता है, उसके बाद अपराधी या संत। लेखक सावधानी से मीडिया के साथ-साथ व्यक्तित्व की परतें भी खोल कर रख देते हैं। **— सिनिवाली शर्मा, *फ़ेसबुक***

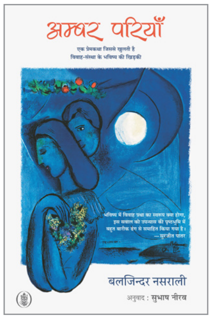

Powerful,Exhilarating, Beautiful story.

A tale of ordinary proffesor who finds him at the crossroad of life to chose between his present and future. Completely engrossing and riveting,an unputdownable novel. Baljinder Nasrali deserves all the applauds for enriching Punjabi literature with his commendable work. **— Dr.Pushpinder jit, *Facebook***

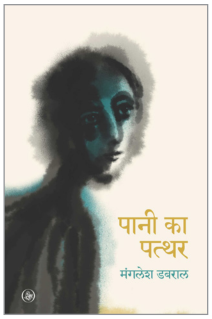

मंगलेश डबराल का सद्य:प्रकाशित कविता संग्रह 'पानी का पत्थर' उनके निधन के बाद प्रकाशित हुआ है जिसमें कुल 43 कविताएँ संगृहीत हैं और इसकी प्रकाश्य प्रति तैयार संगीता डबराल ने की है। इस सद्य:प्रकाशित कविता-संग्रह 'पानी का पत्थर' की कविताएँ अपने समवेत पाठ में स्मृतियों का एक बेहद आत्मीय कोलाज प्रस्तुत करती है।

— सुभाष रस्तोगी, *दैनिक ट्रिब्यून*

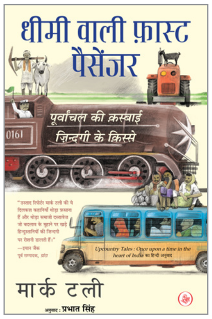

Mark Tully a living legend and great journalist doesn't need any introduction but i never know him as a remarkable short story writer.These short stories are really amazing and deep rooted in indian rural culture and sub culture but this was known to me only by this wonderful translation of him into Hindi by my old and dear friend Prabhat.

— khalid zawed, *facebook*

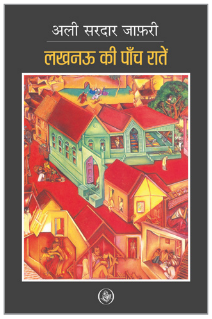

लखनऊ की ठिठुरती हुई वो सर्द रातें जहाँ वो नौजवान जब गुजरते हैं तो लोग कहते हैं, "देखो वो नए शायर जा रहे हैं". वो दुनिया जो फ़ैज़ की दुनिया है, मजाज़ की दुनिया है, जिस नायाब दुनिया के दरवाज़े अली सरदार जाफ़री ने हम सब के लिए खोल दिए हैं। ये किताब अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के दिन नों की याद है, लखनऊ के डालीगंज, कैसरबाग की याद है, आज़ादी के सपने लेकर दीवानावार घूमते फ़ाक़ा-कश नौजवानों की याद है।

— उमेश पंत, *फ़ेसबुक*

'मैं बोरिशाइल्ला' धार्मिक उन्माद की आड़ में छिपे निहित स्वार्थों का पर्दाफाश करने वाला उपन्यास है। ये रचना बताती है कि कैसे कुछ लोग अपने स्वार्थों को साधने के लिए धर्म का इस्तेमाल करते हैं। धर्म से इतर संस्कृति अस्तित्व रखती है। लेखिका ने बांग्लादेश के उदय की कहानी के बहाने सत्ता के स्वार्थ और अपनी संस्कृति की हिफ़ाजत की लड़ाई की कहानी कही है। धर्म के नाम पर पाकिस्तान बनने और फिर बांग्लादेश बनना ये बताता है कि एक धर्म के नाम पर आप राष्ट्र की कल्पना नहीं कर सकते। **— सुबोध कुमार, *फ़ेसबुक***

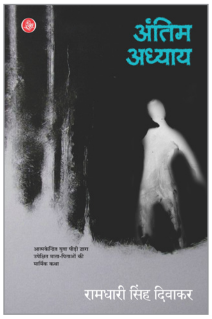

चार बूढ़ों का रोजनामचा वट-चौपाल पर खुलता है, उसकी कहानी है - अंतिम अध्याय। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, जीवन के आख़िरी पड़ाव के लोगों की ये कथा है। वे लोग जुटते हैं, अपने दु:ख-सुख बाँटते हैं, देश-दुनिया की चर्चा करते, पुराने दिनों को याद करते हैं। कहानी में मौसम के हर रंग का चित्रण है। वृद्धों को छोड़ दिए जाने की व्यथा है। हालाँकि कहानी सुखांत होते हुए भी, ऐसा कोई समाधान नहीं प्रस्तुत करती जिससे वृद्धों के एकाकीपन या विपन्नता का कोई हल निकले। **— लखी, *फ़ेसबुक***

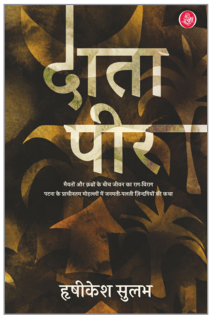

उपन्यास 'दाता पीर' में हाशिये के भारतीय मुसलमानों के सामाजिक जीवन के साथ उनकी सांस्कृतिक पद्धतियों और आध्यात्मिक विधियों का अत्यंत संवेदनशील और वैचारिक चित्रण किया गया है। एक समाज जब रोज नफ़रत और वैमनस्य की ओर बढ़ता जा रहा है तो कला-साहित्य का काम है कि वो उस समाज को याद दिलाये कि धर्म, नफ़रत करने के लिए नहीं बना था।

— रूपम मिश्र, *फ़ेमिनिजम इन इंडिया*

चर्चा में किताबें

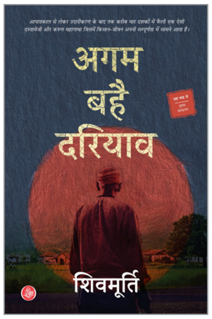

यह उपन्यास हाशिये के मनुष्यों के दुखों का एक विस्तृत दस्तावेज है। यहाँ एक ऐसा समाज रचा गया है जो अभी भी वहीं खड़ा है। उनके जीवन में कोई बुनियादी बदलाव नहीं आया। समाज का हर वर्ग उपन्यास में उपस्थित है और अपनी बात कह रहा है। गन्ना किसानों की पीड़ा हो या कोर्ट-कचहरी, या फिर पुलिस के छल से जूझता किसान और मजदूर। पीड़ा और कठिनाइयों का एक ऐसा समुद्र जो भारतीय किसानों की राह में आगे बढ़ता है जिसमें वे उसे पार करते कम पर अपने दुख को लिये डूबते बहुत ज्यादा हैं। **— रूपम मिश्र, *फेमिनिजम इन इंडिया***

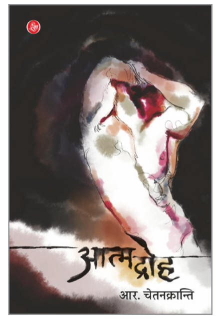

चेतनक्रान्ति की कविताओं को पढ़ना, जानना और समझना दरअसल विरोध के उन बिन्दुओं को देखना है, जहाँ विरोध किया जाना बेहद जरूरी है। चेतनक्रान्ति विरोध के लिए विनम्र भाषा और पंपरागत मुहावरों के इस्तेमाल के हिमायती भी नहीं हैं। उनकी कविताओं में विरोध सहमें हुए शब्दों में नहीं होता बल्कि वह सभ्यता, विनम्रता और हर तरह के पाखंड को बेनकाब करता हुआ आता है। चेतनक्रान्ति हर उस विरोधी शक्ति के सामने खड़े दिखाई देते हैं, जो नागरिकता और राष्ट्र की आत्मा को नष्ट करना चाहती हैं। **— सुधांशु गुप्त**

'कोई नहीं मानेगा कि दुनिया बहुत सुंदर हो सकती थी, पर कुछ लोगों ने उसका खूबसूरत हिस्सा अपनी ओर घुमा लिया है...' - इस विसंगति को इंगित करती कहानी है, गीत चतुर्वेदी रचित 'गोमूत्र'। लंबी कहानी या छोटा उपन्यास, जो आप इसे कहना चाहें, एक ऐसे पात्र को केंद्र में रखकर रचा गया, जिसे नाम देने की भी ज़रूरत महसूस नहीं हुई। कहानी बेचैनी देती है। न सिर्फ़ बिंब से, बल्कि कथ्य से भी। उस सच को उघाड़ती है, जो न जाने किस नशे में हर आम आदमी भुलाए रहता है। **— लखी बरनवाल, *अहा ज़िंदगी***

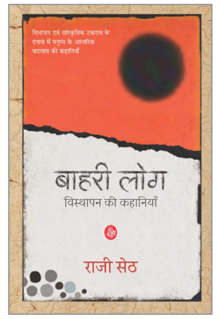

विभाजन की त्रासदी को पौन सदी से अधिक हो गए। लेकिन विस्थापन का दर्द लोगों के दिलों में आज भी ज़िंदा है। व्यक्तिगत रूप से यह दर्द झेल चुकीं लेखिका की क़लम में यह साफ़ झलकता है। एक कहानी है 'बाहरी लोग'। इस संग्रह में दो तरह की कहानियां हैं। पहली, विभाजन केंद्रित हैं। दूसरा पक्ष दो अलग संस्कृतियों के टकराव का है। शिल्प के स्तर पर हरेक कहानी बेजोड़ है और संवेदनाओं का गहरा सागर भी।

— रोमेश साहू, *आखर अनंत*

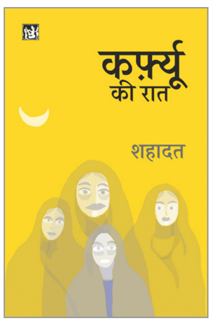

अक्सर ही हमें यह सुनने को मिलता है कि 'हर मुसलमान आंतकवादी नहीं होता, मगर हर आतंकवादी मुसलमान होता है।' सबसे पहले तो यह बात कि क्या यह सच है, और अगर सच है तो इसमें कितनी सच्चाई है। किसी मुसलमान के आतंकवादी बनने की इस प्रक्रिया में हमारे समय के युवा और चर्चित लेखक शहादत ने अपनी कहानी 'इमरान भाई' में बहुत अच्छी तरह से समझाया है। **— अंशुल आग्नेय, *जनचौक***

कृष्ण कल्पित की जाली किताब पढ़ने के बाद यदि किसी पाठक-लेखक के मन में यह बेचैनी पैदा हो कि कि महाकवि चंद बरदाई के बारे में जानने के बावजूद पढ़ना तो दूर महाभारत और रामचरित-मानस के बराबर की हैसियत रखने वाली उनकी महाकृति पृथ्वीराज रासो तक नहीं पहुँच सका। तब क्या मैं खाक पढ़ाकू हुआ तो कोई आश्चर्य नहीं। संभव है जाली किताब पढ़कर पृथ्वीराज रासो पाठकों के हृदय पर राज करे।

— पवन करण, *फ़ेसबुक*

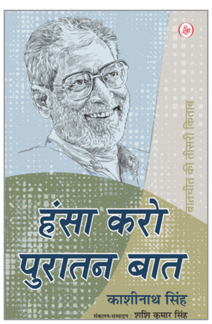

काशीनाथ सिंह से साक्षात्कारों का यह तीसरा और नवीनतम संग्रह है, जिसमें उनके 1989 से 2022 तक के साक्षात्कार सम्मिलित हैं। ये ऐसे साक्षात्कार हैं जो पूर्व प्रकाशित दोनों पुस्तकों, 'गपोड़ी से गपशप' और 'बातें हैं बातों का क्या' में नहीं हैं। इसमें काशी जी से जुड़े वे तमाम सवाल मौजूद हैं, जिनमें एक पाठक की रुचि और जिज्ञासा हो सकती है। **— अनमोल दुबे, *अहा ज़िंदगी***

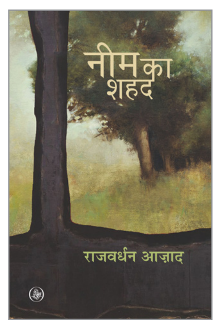

यह पुस्तक महज़ कुछ पृष्ठों की पुस्तक न होकर ज़मीनी स्तर पर, यथार्थ पर निर्भर काव्य पुस्तक है। हिन्दी काव्य जगत में राजवर्धन आज़ाद द्वारा लिखित यह पुस्तक काल्पनिकता और हक़ीक़त के समागम को साफ़ बयाँ करती है। एक कुशल नेत्र चिकित्सक यहाँ समर्थ कवि के रूप में अपनी नायाब पुस्तकरूपी सफलता के साथ आगमित हुए हैं। जो व्यक्ति मनुष्य की आँखों की रोशनी लौटाता है, वह हृदय से कितना संवेदनशील होगा इसका प्रमाण यह कविता-संग्रह है। **— अनुराग मिश्र, *दैनिक जागरण***

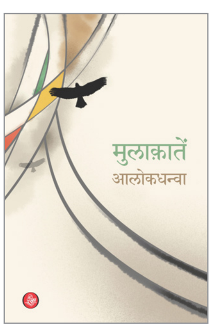

'दुनिया रोज बनती है' इस इकलौते कविता संग्रह के दम पर आलोकधन्वा दूर-दराज तक पाठकों के प्रिय बने रहे. वाद-विवाद-प्रतिवाद से गुजरते हुए भी उनकी लोकप्रियता असंदिग्ध रही है. अब एक लंबी प्रतीक्षा के बाद राजकमल प्रकाशन से आए उनके नए संग्रह 'मुलाक़ातें' की कविताएँ एक बार जरूर देखी जानी चाहिए. एक सरसरी निगाह डालने पर ऐसा लगता है कि इन कविताओं में कहीं-कहीं कवि का अकेलापन भी जैसे मुखर हो उठा है। **—दिनेश श्रीनेत, *फ़ेसबुक***

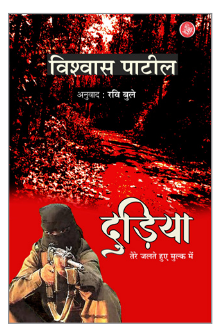

विश्वास पाटील मराठी भाषा के लोकप्रिय लेखक हैं, हाल ही में राजकमल प्रकाशन से उनके दो उपन्यास दुड़िया और महासम्राट का पहला खंड झंझावात का हिन्दी अनूदित संस्करण प्रकाशित हुआ है। दोनों ही उपन्यास अनुवाद की दृष्टि से बहुत ही सार्थकता के साथ सामने आए हैं। दुड़िया जहाँ नक्सलवाद की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है वहीं महासम्राट विद्रोही चेतना के महानायक और हिंदवी साम्राज्य की अलख जगाने वाले योद्धा छत्रपति शिवाजी के जीवन संघर्ष पर केंद्रित है। **—कुमार विजय, *न्यायतक***

चर्चा में किताबें

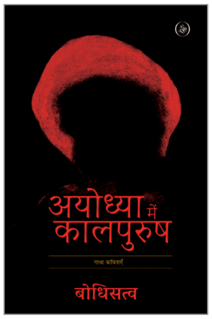

इस संग्रह को हर उस आदमी को पढ़ना चाहिए जो भारतीय समाज, संस्कृति, इतिहास, कला और राजनीति में रुचि रखता है। जिनको कविता की विशेष समझ है उसे भी और जिसे कविता की सामान्य समझ है मेरे जैसे पाठक के लिए भी यह एक जरूरी संग्रह है। राजनीति में हिंसा कैसे सात्विक अस्त्र के रूप में न्यायोचित ठहराई जाती है इसे समझने से ज्यादा जरूरी है कि इस बात के लिए आश्वस्त हो लिया जाए कि आखिर एक दिन जरासंध अपने ही अखाड़े में अपने ही दांव पेंच का शिकार होकर फाड़ दिया जाता है। **— वीरेन्द्र प्रताप, *फ़ेसबुक***

बसंत त्रिपाठी का नया कविता संग्रह 'घड़ी दो घड़ी' पढ़ना जैसे खुद की तलाश में निकल जाना है। होने और होना चाहने के बीच का मार्मिक तनाव इस संग्रह की कविताओं को एक ऐसे आईने में बदल देता है जिसमें पढ़नेवाला खुद को अपने भीतर की दुनिया से सतत संवाद की स्थिति में पाता है। इन कविताओं की निजता एक ऐसी दुनिया में ले जाती है जहाँ कविता के वाचक और पाठक के बीच का भेद खत्म हो जाता है।

— मनोज पांडेय, *फ़ेसबुक*

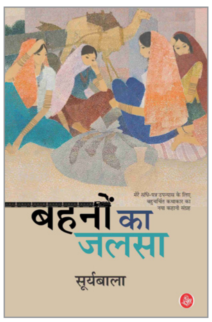

लेखिका ने पठनीयता और प्रवाह को बरकरार रखते हुए, सभ्यता की संवेदनहीन यात्रा में असहाय चलते पात्रों के अत्यन्त सजीव चित्र खींचे हैं। बेहद साधारण और जीवन में रचे-बसे मध्यवर्गीय चरित्रों के मनोजगत से वे उन पीड़ाओं का संधान करती रही हैं जिनके दायरे में पूरी मानवता आ जाती है। दुखद विसंगतियाँ, विडम्बनाएँ मन की तहों के भीतर हरदम चलते संघर्ष इन कहानियों के कथ्य का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। इनमें से कुछ कहानियाँ एक से नेपथ्य पर भी लिखी गई हैं। **— भवन्स नवनीत**

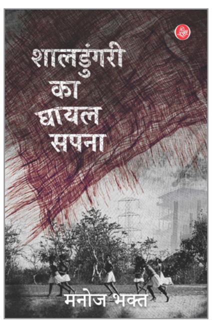

मनोज भक्त का उपन्यास 'शालडुंगरी का घायल सपना', धरती की उस हरी-भरी स्वरूप को बचाने के एक घायल सपने की मार्मिक कहानी है। ये उपन्यास हॉकी खेलती लड़कियों और कोच जेमा कुई के संघर्ष की दास्तान है। पूंजी और सत्ता की इस नव सांस्कृति में कितनी चीखें पैबंद हैं और विकास के नाम पर वे सब घुटती जा रही हैं। **— रूपम मिश्र, *फ़ेमिनिज़्म इन इंडिया***

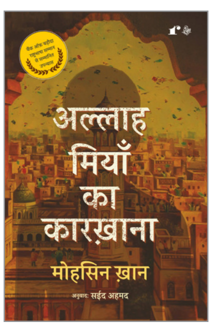

जिब्रान की मासूम आँखों से अल्लाह मियाँ के कारखाने का हाल दिखाने वाले मोहसिन खान वास्तव में ग़ज़ब के लेखक हैं। ये उन मोहल्लों की कहानी है जिनकी कहानियाँ लिखने वाले कम हो गये हैं। ये भाई-बहन की कहानी है। एक बच्चे और उसके मोहल्ले की कहानी है। ये अल्लाह मियाँ से बातें करने वाले मासूम बच्चे की कहानी है। जो है, वो क्यों है? वो उन सवालों की कहानी है। **— सविता पाठक, *फ़ेसबुक***

वनमाली सृजनपीठ एवं विश्वरंग द्वारा आयोजित 'राष्ट्रीय वनमाली कथा सम्मान 2024' में दस अलग-अलग श्रेणियों में रचनाकारों को वनमाली कथा सम्मानों से अलंकृत किया गया जिसमें राजकमल प्रकाशन समूह के लेखक शिवमूर्ति को 'वनमाली राष्ट्रीय कथा सम्मान', कथाकार डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी को 'वनमाली कथा मध्यप्रदेश सम्मान', सम्पादक-कथाकार अखिलेश को उनकी पत्रिका 'तद्भव' हेतु 'वनमाली कथा पत्रिका सम्मान', लेखक अनिल यादव को 'वनमाली कथेतर सम्मान' और कथाकार प्रत्यक्षा को 'वनमाली विशिष्ट कथा सम्मान' से सम्मानित किया गया। सभी सम्मानित लेखकों को राजकमल प्रकाशन समूह की ओर से हार्दिक बधाई।

शिवानी सिब्बल के पहले और बेस्टसेलर उपन्यास 'इक्वेशन्स' के हिन्दी अनुवाद 'सियासत' का जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल में हुआ लोकार्पण

03 फरवरी, 2024 (शनिवार) नई दिल्ली जयपुर। शिवानी सिब्बल के पहले बहुचर्चित उपन्यास 'इक्वेशंस' (Equations) के हिन्दी संस्करण 'सियासत' का लोकार्पण शनिवार को जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल में हुआ। इस कार्यक्रम में लेखक शिवानी सिब्बल, वरिष्ठ साहित्यकार मृदुला गर्ग, अनुवादक प्रभात रंजन, राजकमल प्रकाशन समूह के सम्पादकीय निदेशक सत्यानन्द निरुपम और कार्यक्रम सूत्रधार मीता कपूर उपस्थित रहे। लोकार्पण के बाद लेखक और अनुवादक से मीता कपूर ने इस उपन्यास पर बातचीत की।

इस मौके पर कार्यक्रम की सूत्रधार मीता कपूर ने कहा कि जब मैंने किताब के अनुवादक प्रभात रंजन से पूछा कि इस किताब के अनुवाद का ख़याल आपके मन में कैसे आया तो उन्होंने कहा कि जैसे ही मैंने इस किताब को पढ़ना शुरू किया मुझे लगा, जैसे यह किताब अनुवाद की प्रतीक्षा ही कर रही है। हिन्दी की वरिष्ठ लेखक मृदुला गर्ग ने कहा कि यह शिवानी के लिए एक मुबारक दिन है। जब किसी की पहली किताब मुकम्मल होती है तो वह उसके लिए मुबारक दिन होता है। फिर जब पहली किताब छप कर आती है तो भी मुबारक दिन होता है। और जब उसका अनुवाद होता है तो वह भी मुबारक दिन होता है। यही बात मेरी पहली किताब के पूरा होने पर कृष्णा सोबती जी ने मुझे कही थी। लेखक और अनुवादक प्रभात रंजन ने कहा कि कहानी के केंद्र में लुटियंस दिल्ली है। कहानी का नायक दिल्ली विश्वविद्यालय के इवनिंग कॉलेज में हिंदी ऑनर्स का छात्र है। यही पात्र नायक के तौर पर उभर कर सामने आता है। यह किताब लुटियंस दिल्ली के बदलाव की कहानी भी बयान करती है।

'सियासत' की लेखक शिवानी सिब्बल ने इस अवसर पर कहा कि इस उपन्यास में दो अलग-अलग पृष्ठभूमि से आने वाले लोगों की कहानी है जो कुछ हासिल करना चाहते हैं। दोनों की चुनौतियाँ अलग हैं, दोनों की बाधाएँ अलग हैं। मैं दिल्ली में पली-बढ़ी हूँ। पहले की दिल्ली से आज की दिल्ली बिलकुल अलग है। उसमें बहुत बदलाव हो चुका है। मैं उस बदलाव को पकड़ना चाहती थी। इस बात ने भी मुझे इस किताब को लिखने के लिए प्रेरित किया। मैंने लिखना बहुत देर से शुरू किया है। इस वजह से अपने अनुभव को जो अब तक मेरे लेखन में छूट गया था, उसे भी मैंने इस किताब के सहारे कहने का प्रयास किया है। राजकमल प्रकाशन समूह के सम्पादकीय निदेशक सत्यानन्द निरुपम ने इस मौक़े पर कहा कि यह किताब हिन्दी पट्टी की सियासत के बारे में है। ये न सिर्फ़ इसके अतीत को सामने ला रही है, बल्कि यह भविष्य की भी झलक दिखलाती है। यह बदलती हुई सामाजिक संरचना की एक खूबसूरत कहानी है। राजकमल प्रकाशन ने अंग्रेज़ी में लिखे गए ऐसे उपन्यासों का एक तरह से श्रृंखला प्रकाशित कर दी है, जो अंग्रेज़ी में लिखे जाने के बावजूद हिन्दी मिज़ाज के हैं। अमितवा कुमार और अमिताभ बागची से लेकर शिवानी सिब्बल तक अब एक पूरा रेंज है।

दैनिक जागरण बिहार संवादी में शामिल हुए राजकमल प्रकाशन समूह के लेखक

त्रिपुरारि शरण

हृषीकेश सुलभ

आशा प्रभात

अवधेश प्रीत

भावना शेखर

विश्वास पाटील

इस बीच जो हमसे बिछड़ गए

उषा किरण खान
(हिन्दी नाटककार पत्रकार)

मुनव्वर राना
(प्रख्यात शायर)

गोगी सरोज पाल
(पंजाबी कवि-चित्रकार)

हरिराम द्विवेदी
(सुप्रसिद्ध रचनाकार)

राजेश जैन
(लेखक-नाटककार)

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक अशोक कुमार महेश्वरी ने बी.के. ऑफसेट, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32 से मुद्रित कराकर
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित किया।
संपादक : अशोक कुमार महेश्वरी